ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 4 अंक : 1 अक्टूबर-नवम्बर 2013 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

दीपावली पर लक्ष्मी प्राप्ति के अचूक उपाय	डा. महेश पारासर	2
मनोवांछित फल प्राप्ति हेतु सिद्ध पोटलियाँ	भविष्य दर्शन	4
एकांक्षी नारियल	डा. रचना के भारद्वाज	5
धन बाधा को कैसे दूर करे	डा. शोनू मेहरोत्रा	6
पुराणों में महालक्ष्मी का स्वरूप	श्रीमती कविता अगरवाल	7
करवा चौथ व्रत	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	8
कूर्म पृष्टीय श्रीयंत्र	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	9
गोमती चक्र के अचूक प्रयोग	पं. अजय दत्ता	10
दीपावली–पँचपर्व त्योहार	श्री श्री भगवान पाराशर	11
दीपावली पूजन विधि	डा. महेश पारासर	12
श्री दाता श्री यंत्र	श्रीमति रेनू कपूर	13
मानव जीवन के सोलह संस्कार	श्री सुरेश अग्रवाल	14
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	15–16
ग्वाला और लक्ष्मी	विजय शर्मा	17

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

दीपावली पर लक्ष्मी प्राप्ति के अचूक उपाय

प्रिय सदस्यों आप सभी को **भविष्य दर्शन** की तरफ से दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं। जैसा की आप सभी को पता है कि दीपावली पर हमनें हमेशा आपको दीपावली पर लक्ष्मी प्राप्ति के अचूक उपाय बतायें हैं। आप सभी को ज्ञात होगा के पिछले वर्ष हमने **सिद्ध धन दाता लक्ष्मी यंत्र एवं मनोकामना पूर्ति यंत्र** की स्थापना एवं पूजन विधि के बारे मे विस्तृत जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की थी।

अधिकांश पाठको ने अपने अनुभवो को साझा करते हुये यह बताया है कि सिद्ध धनदाता एवं मनोकामना पूर्ति यंत्र को पूजा घर में स्थापित करनें से उनको आशा अनुरुप लाभ मिला हैं। किसी को आर्थिक रुप से तो किसी को व्यापार में आ रही रुकावटों में कमी होने का लाभ मिला एवं मनोकामना पूर्ति व वांछित कार्यो में भी सफलता प्राप्त हुई। इसीलिये हमनें पुनः इस दीपावली पर भी इन्ही यंत्रों के बारे में प्रकाशित करने का निर्णय लिया है, जिससे सभी पाठक इसका लाभ ले सकें। आशा करते है कि इस बार भी विधिवत यंत्रों को स्थापित करने से माँ लक्ष्मी जी, श्री गणेश जी, श्री कुबेर महाराज एवं माँ सरस्वती जी की विशेष अनुकम्पा वर्ष पर्यन्त आपके घर परिवार व कार्यस्थल पर बनी रहें जिससे धन, यश, मनोकामना एवं कार्य सिद्धि की प्राप्ति हो।

निश्चित रुप से दीपावली प्रकाश पर्व है लेकिन सबसे पहले हमें प्रकाश की सही परिभाषा समझनी होगी। प्रकाश का तात्पर्य केवल दीपक, मोमबत्ती और बिजली से कृत्रिम प्रकाश कर कदापि नहीं है और यदि उजाला करना ही दीपावली है तो कोई महत्त्व नहीं है ऐसी दीपावली का क्या महत्त्व है?

श्री महा धनदाता लक्ष्मी यंत्र

श्री लक्ष्मी यंत्र

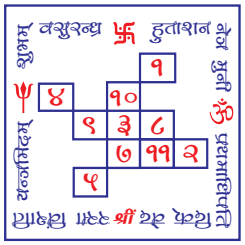

श्री गणेश यंत्र

श्री धन वापसी यंत्र

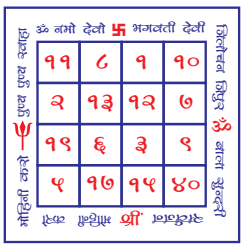

श्री विष्णु यंत्र

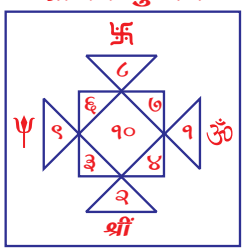

श्री लक्ष्मी वाहन यंत्र

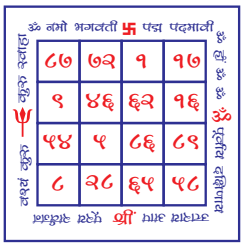

श्री गरुण वीसा यंत्र

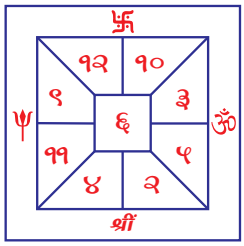

ऐसे प्रकाश का जो केवल एक ही रात के लिये किया जाये अगली रात फिर अन्धकारामय दिखाई दे? सही अर्थो में प्रकाश तो वो है जो जीवनपर्यन्त रहे, जीवन के अंधेरे मिटाकर जीवन को जगमग करता रहे और प्रकाश पर्व दीपावली का यही अर्थ है, यही इसकी विलक्षणता है, यही इसका संदेश है कि इस दिवस का सदुपयोग करके हम अपने जीव में लक्ष्मीरुपी समृद्धता का इतना तीव्र प्रकाश करें जिसकी जगमगाहट से दरिद्रता अभाव, कर्ज और असफलता रुपी अंधकार जीवन में कभी भी उत्पन्न न हो सके, हमारा पूरा जीवन सम्पन्नता और ऐश्वर्य के प्रकाश से जगमगाता रहे और जो बन्धु लक्ष्मी तंत्र–पर्व **"दीपावली"** के महत्त्व को सझकर इस दिवस की तेजस्विता का सही सदुपयोग कर लेते हैं निश्चित रुप से वे जीवनपर्यन्त अभाव, दरिद्रता और असफलता रुपी अन्धकार से अछूते रहते हैं मुक्त रहते हैं। वर्तमान युग **प्रतिस्पर्धा** का युग है। मेंहगाई दिन भर दिन बढ़ती ही जा रही है। चाहे कितना भी धन अर्जित कर लो, फिर भी ऐसा लगता है कि धन का आवागमन ठीक नही हो रहा या फिर कम हो रहा है। व्यक्ति रात–दिन आय के श्रोत बढ़ाने के बारे में सोचता रहता है। यह काफी हद तक उचित भी है। व्यक्ति मेंहगाई से तो लड़ नहीं सकता तो क्यों न वह आय की वृद्धि करें?

आय की वृद्धि यानी लक्ष्मी का आगमन। वैसे तो लक्ष्मी को हमेशा ही पूजा जाता है लेकिन दीपावली पर लक्ष्मी–गणेश की आराधना का विशेष महत्व हिन्दू धर्म में बताया गया है। दीपावली पर सभी लक्ष्मीजी–गणेश जी की पूजा पूर्ण मनोयोग से करते है लेकिन यदि दीपावली पर थोड़े से विशेष उपाय कर लिए जायें तो वर्ष पर्यन्त माँ लक्ष्मी की साधक और उसके परिवार पर विशेष दृष्टि रहती है। इस वर्ष दीपावली **3 नवम्बर 2013** दिन रविवार को मनायी जायेगी। हिन्दूओं के लिए इस पर्व का बहुत महत्व है। सम्पूर्ण भारत वर्ष के अतिरिक्त जहाँ–जहाँ भारतीय मूल के लोग निवास करते है यह पर्व धूमधाम के साथ करीब–करीब सम्पूर्ण देशों में हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी परिवार लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा श्रद्धा भाव से करते हैं। सभी घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों में महालक्ष्मी का पूजन अवश्य करते हैं। व्यापारी वर्ग बही खाता तिजोरी ओर तराजू की पूजा करते है। दीपावली के दिन लक्ष्मी–गणेश जी की विशेष पूजा करने से वर्ष भर लक्ष्मी की कृपा बनी रहती है। दीपावली पर स्थिर लग्न में पूजा करने का विधान है। दीपावली पर पूजा तो सभी करते है परन्तु किस प्रकार से और किस चीज के साथ पूजा की जाऐ तो वर्ष पर्यन्त श्री लक्ष्मी जी की पूर्ण कृपा बनी रहें।

सिद्ध धन दाता लक्ष्मी यंत्र एवं मनोकामना पूर्ति यंत्र– दीपावली के पूजन में श्री धन दाता लक्ष्मी यंत्र की पूजा विधि विधान से करने से माँ लक्ष्मी की कृपा चिरकाल तक बनी रहती है। माँ लक्ष्मी की स्थिरता के लिए ही इस यंत्र की पूजा दीपावली पर की जाती है। इसकी पूजा बहुत ही आसान है। इस यंत्र को स्थापित करने इस यंत्र की फल, फूल, गंध, अक्षत, रोली, कुमकुम से पूजन करके इस यंत्र से लक्ष्मी पीछे लघु बीज मंत्र **'ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः'** मंत्र का 11 माला जाप कमल गढ्ढे की माला या स्फेटिक की माला से करना चाहिए। इससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर सभी तरफ से खुशहाली प्रदान करती है।

उपरोक्त दोनों यंत्रों की पूजा से अद्‌भुत और तुरन्त प्रभाव मिलता हैं। यदि शुद्ध आचरण और मनोकामनों से यंत्रो की पूजा करता हैं उस पर माँ लक्ष्मी जी वर्ष पर्यन्त असीम कृपा बनी रहती है, तो अपनी दीपावली को शुभ दीपावली बनायें। दीपावली पूजन की विधि पत्रिका के पेज क्रमांक 14 पर विस्तार से दे रखी हैं।

महेश पारासर

दीपावली पूजन का समय सन् 2013

03–11–2013 रविवार के दिन पूजन समय प्रातः 9:16 से 11:56 तक, दोपहर 1:40 से 4:35 बजे तक, सांय 6:12 से 10:21 बजे तक, रात्रि 12:45 से 3:01 बजे तक के मुहूर्त रहेंगें। जिसमे सर्वश्रेष्ठ पूजन समय प्रातः 9:16 से 9:52 बजे तक, दोपहर 1:40 से 2:27 बजे तक, सांय 6:12 से 08:08 तक एवं रात्रि 01:38 से 03:01 तक रहेंगें। जिसमें अभीष्ट धन लाभ, सिद्धि प्रद रहेगी। राहुकाल का समय प्रातः 7:52 से 09:15 तक।

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

अमृत वचन

कोई भी गुरु मार्ग दिखा सकता है किन्तु चलना तो स्वयं को ही पड़ेगा। कोई भी गुरु पहुँचा नही सकता।

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

मनोवांछित फल प्राप्ति हेतु सिद्ध पोटलियाँ

भविष्य दर्शन
आगरा

कार्तिक अमावस्या को दीपावली का त्योहार मनाया जाता है। यह परम पवित्र त्योहार धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को प्रदान करने वाला त्योहार है। हमारे हिंदू धर्म दर्शन में अन्य देवी देवताओं के साथ धन और ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी का प्रमुख स्थान है। उनकी पूजा करने से साधक की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती है। और सुख, समृद्धि, आयु, आरोग्य, आनंद की प्राप्ति होती है।

अपनी विशेष कामना के अनुसार श्रद्धा–विशवास पूर्वक दीपावली की रात्रि से यंत्र मंत्र तंत्र की साधना का शुभारंग करने से कार्य सिद्धि शीध्र होती है।

अपनी समस्या के अनुसार कोई भी व्यक्ति दीपावली से निम्न पोटलियों में वर्णित साम्रगी के द्वारा अपने घर में अथवा अपने कार्यालय अथवा व्यवसाय स्थल पर पूजन कर सकते है।

दीपावली पूजन पोटली: इस पोटली में कनकधारा यंत्र, स्फटिक श्री यंत्र, कमल गट्टे की माला, दक्षिणावर्ती शंख, गोमती चक्र, कोड़ी और लक्ष्मी पूजन विधि की पुस्तिका भी उपलब्ध है।

इस संपूर्ण सामग्री को दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन मुहूर्त में पुस्तिका में दी गई विधि के अनुसार लक्ष्मी का पूजन स्वयं करें अथवा किसी कर्मकांडी ब्राह्मण से करवाएं।

दीपावली पूजन सामग्री की विशेषता: कनकधारा यंत्र स्वयं महालक्ष्मी का स्वरुप है। स्फटिक से बने यंत्र एवं देव मूर्तियां विशेष फलदायी होती हैं। इनके पूजन से मनोनुकूल फल की प्राप्ति शीघ्र होती है। कोड़ी विशेषकर लक्ष्मी जी के लिये होती हैं। गोमती चक्र के लिये पढ़ें पेज क्रमांक 12 पर। कमल गट्टे की माला पर लक्ष्मी मंत्र का जप शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।

ऊँ श्रीं कमले कमलालये ऊँ श्रीं महालक्ष्मै नम:

संपूर्ण व्यापार वृद्धि पोटली: इस पोटली में महाधन दाता यंत्र, स्फेटिक श्री यंत्र, एकांक्षी नारियल, 5 मुखी रुद्राक्ष, श्री यंत्र कछुआ और कमल गट्टे की माला का समावेश है।

महाधन दाता यंत्र (पेज न. 4) के पूजन से धनागम के रास्ते खुलते हैं, आय के स्रोतों में वृद्धि होती है। स्फेटिक श्री यंत्र के पूजन, दर्शन से स्थिर लक्ष्मी तथा यश, पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। लक्ष्मी गणेश के पूजन से सभी विघ्न–बाधाओं से रक्षा होती है और व्यापार में सुख समृद्धि बनी रहती है। एकांक्षी नारियल के लिये पढ़ें पेज न. 7 पर। श्री यंत्र कछुआ के लिये पढ़ें पेज न. 11 पर। कमल गट्टे की माला पर लक्ष्मी मंत्र का जप शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।

पूजन विधि–इस सम्पूर्ण सामग्री को दीपावली की रात्रि में पूजन के समय गंगाजल अथवा शुद्ध जल से धोकर पंचामृत से स्नान कराएं और गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप से पूजन करें। फिर यंत्रों को अपने व्यवसाय स्थल की उत्तर–पूर्व दिशा में स्थापित करें। निम्न मंत्र का नित्य एक माला जप करें।

ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं लक्ष्मी रुपाय मम
व्यापार वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

संपूर्ण पारिवारिक सुख-समृद्धि पोटली– इस पोटली में स्फटिक श्री यंत्र, स्टार वास्तु यंत्र, दक्षिणावर्ती शंख, एकांक्षी नारियल, कछुआ श्री यंत्र तथा क्रिसटल बॉल का समावेश है।

कछुआ श्री यंत्र का घर में पूजन दर्शन करने से सकारात्मक ऊर्जा का विकासस होता है। वास्तु यंत्र के पूजन से घर में वास्तु संबंधी दोषों की शांति होती है। दक्षिणावर्ती शंख के पूजन से घर में लक्ष्मी का वास होता है। एकांक्षी नारियल के लिये पढ़ें पेज न. 7 पर। श्री यंत्र कछुआ के लिये पढ़ें पेज न. 11 पर। क्रिसटल बॉल लटकाने से बच्चों की पढ़ाई में ध्यान लगा रहता है।

इस संपूर्ण सामग्री को दीपावली के दिन पंचामृत से गंगाजल से शुद्ध करके गंध, अक्षत, फूल, धूप, दीप से पूजन करके सभी यंत्रों को घर के पूजा स्थल में स्थापित करें, दक्षिावर्ती शंख की नित्य पूजा करें अथवा सूर्य को जल का अर्घ्य दें। इस विधि से पूजन स्थापन करने से परिवार में सुख समृद्धि बनी रहती है। परिवार का कोई भी सदस्य निम्नलिखित मंत्र का नित्य 108 बार जप करें।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।

स्वास्थ्य लाभ पोटली: इस पोटली में महामृत्युंजय यंत्र, महामृत्युंजय लॉकेट (चांदी में), स्फटिक शिवलिंग, रुद्राक्ष माला और सात मुखी रुद्राक्ष का समावेश है।

महामृत्युंजय यंत्र तथा लॉकेट स्वयं भगवान महामृत्युंजय का स्वरुप है। स्फटिक शिवलिंग की पूजा करने से शारीरिक तथा मानसिक व्याधियों से रक्षा होती है। सातमुखी रुद्राक्ष को धारण करने से असाध्य बीमारियों से मुक्ति मिलती है।

इस संपूर्ण सामग्री को दीपावली को रात्रि के समय पंचामृत से अभिषिक्त, करके गंध, अक्षत, फूल, धूप, दीप आदि से पूजन महामृत्युंजय मंत्र तथा स्फटिक शिवलिंग को पूजा घर की उत्तर दिशा में स्थापित करें। नित्य पूजन दर्शन करते रहें। महामृत्यूंजय लॉकेट तथा सातमुखी रुद्राक्ष को गले में धारण करें तथा निम्नलिखित मंत्र का नित्य एक माला जप करें।

ऊँ नम: शिवाय ऊँ महामृत्युन्जय नम:

❋❋❋

यंत्रों को पुन: सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

एकाक्षी नारियल

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

1 एकाक्षी नारियल– प्रकृति का यह आश्चर्यजनक वरदान है। सामान्यतः नारियल के ऊपर जटा होती है। इस जटा को दूर करने पर कठोर गोला दिखाई देता है जिसके अन्दर नारियल होता है। इस कठोर गोले पर दो बिन्दू आंख की तरह दिखाई देते हैं। ये दो बिन्दू लगभग सभी नारियलों में पाये जाते है परन्तु सौभाग्य से कुछ ही नारियल ऐसे होते है जिन पर दो बिन्दू न होकर एक ही बिन्दु होता है। यह बिन्दु आंख की तरह दिखाई देता है अतः जिस नारियल पर एक बिन्दु होता है, उसे एकाक्षी नारियल कहते हैं।

इस प्रकार का नारियल कठिनाई से प्राप्त होता है, और यह लक्ष्मी का स्वरुप माना जाता है। हजारों लाखों नारियलों में से एक–आध नारियल ही ऐसा होता है, इसलिये यह दुर्लभ माना गया है।

प्रयत्न करने पर इस प्रकार का नारियल प्राप्त हो जाता है।

यदि कुछ भी प्रयोग न किया जाय तब भी इस प्रकार का नारियल लक्ष्मी प्राप्ति में सहायक होता है और अत्यन्त सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घरों में ही इस प्रकार का नारियल पाया जाता है।

दीपावली के दिन इस नारियल पर कल्प प्रयोग किया जाता है। सबसे पहले साधक स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने सामने थाली में चन्दन, या कुंकुंम से अष्ट दल बनाकर उस पर इस नारियल को रख दें, और अगरबत्ती व दीपक लगा दें।

फिर पंचामृत (दूध, दही, घी, शक्कर, शहद) से इस श्री फल को स्नान करावें और बाद में शुद्ध जल से स्नान कराकर पवित्र वस्त्र से पौछ लें। फिर इस पर पुष्प, चावल, फल, नैवेद्य आदि रखे और लाल रेशमी वस्त्र ओढ़ावें।

इसके बाद उस रेशमी वस्त्र को जो कि आधा मीटर लम्बर हो बिछाकर उस पर केशर से निम्नलिखित मंत्र लिखे–

ऊँ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं महालक्ष्मीं स्वरुपाय एकाक्षिनालिकेराय नमः सर्वसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

फिर इस रेशमी वस्त्र पर उस नारियल को रख दे और निम्न मंत्र पढ़ते हुए उस पर 108 गुलाब के पुष्प चढ़ावें, अर्थात् प्रत्येक पुष्प चढ़ाते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करता रहें।

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं एकाक्षिनालिकेराय नमः।

इसके बाद गुलाब के पुष्प हटाकर उस रेशमी वस्त्र में नारियल को लपेटकर थाली में चावलों की ढेरी पर रख दें, और निम्नलिखित मंत्र की 11 मालाएं उस रात्रि को (दीपावली की रात्रि को) फेरे।

ऊँ ह्रीं श्री क्लीं ऐं एकाक्षाय श्रीफलाय भगवते विश्वरुपाय सर्वयोगेश्वराय त्रैलोक्यनाथाय सर्वकार्य प्रदाय नमः।

प्रातः काल उठकर पुनः 21 गुलाब से पूजा करें और उस रेशमी वस्त्र में लिपटे हुए नारियल को पूजा स्थान में रखें दें।

प्रभाव–

1. इस प्रकार का नारियल अत्यन्त सौभाग्यदायक और लक्ष्मी दायक होता है। जिस घर में ऐसा नारियल होता है उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।

2. ऐसा नारियल गर्भवती स्त्रियों को सुंघाने मात्र से बिना कष्ट के बच्चा हो जाता है।

3. बांझ स्त्री को ऋतु स्नान के बाद पानी में यह नारियल घोलकर वह पानी पिला दे तो उसके अवश्य ही संतान होती है।

4. यदि घर में भूतप्रेत का उपद्रव हो तो मूलमंत्र सात बार पढ़कर इस नारियल को पानी में डुबोकर पुनः सात बार मंत्र पढ़े फिर यह नारियल निकाल दें, और वह पानी घर में छिडक दें तो भूत प्रेत का उपद्र समाप्त हो जाता है। ऐसा पानी जिस घर में भी छिड़का जाय उस घर से भूत–प्रेत का उपद्रव समाप्त हो जाता है।

5. यदि कोई बैरी या शत्रु हो तो लाल कनेर का फूल लेकर इस नारियल पर रख कर उस शत्रु को नाम लेकर मूल मंत्र की एक माला फेर कर वह फूल दक्षिण दिशा में फेंक दें तो शत्रु समाप्त होता है।

2 श्री दक्षिणावर्ती शंख– मूलतः भारत में जितने भी शंख पाये जाते हैं वे वामवर्त शंख होते है परन्तु यह प्रकृति का चमत्कार ही है कि बहुत कम शंख दक्षिणावर्ती होते है, ऐसे शंख ही दुर्लभ और महत्वपूर्ण माने जाते हैं। हजारों–लाखों शंखों में से एक दो शंख दक्षिणावर्त होते है शंखों में विशेष कर दक्षिणावर्त शंख में भी तीन भेद होते है।

1.नरशंख, 2. मादाशंख 3 नपुंसक शंख

इसमें मादा एवं नपुंसक शंख व्यर्थ होते हें, केवल नरशंख का ही माहात्म्य है, श्याम और धुंए के रंग के शंख शंखली कहलाते है।

दक्षिणावर्त शंख ही लक्ष्मी का रुप माना जाता है। यदि ऐसा शंख मंत्र सिद्ध न भी हो फिर भी वह घर में होता है तो जीवन में आर्थिक

शेष पेज 18 **पर**.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

धन बाधा को कैसे दूर करे

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर
वास्तु प्रवक्ता–अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

सभी पाठक गणों को दीपावली की शुभ कामनाऐं। महालक्ष्मी की कृपा सदैव आप व आपके परिवार पर बनी रहें। इसी शुभकामना के साथ यह लेख में लिख रही हूँ।

देवी महालक्ष्मी संपूर्ण ऐश्वर्य, चल–अचल संपत्ति, यश कीर्ति, एंव सकल सुख वैभव देने वाली साक्षात जगत माता नारायणी हैं। श्री गणेश जी समस्त विघ्नों के नाशक, अमंगलों को दूर करने वाले, सद्विद्या एवं बुद्धि के दाता है। कार्तिक अमावस्या अर्थात् दीपावली के दिन इनकी संयुक्त पूजा अर्चना करने से कुटुम्ब परिवार में धनसंपत्ति का सुख चिरकाल तक बना रहता है।

इस वर्ष दीपावली का शुभ त्यौहार **03 नवम्बर दिन रविवार स्वाति नक्षत्र एवं आयुष्मान् योग में मनाया जायेगा जो कि सुख का प्रतिपादन करने वाला होता है।** दीपावली के पावन पर्व में गणेश–लक्ष्मी इन्द्र आदि देव पूजन का क्रम सम्पूर्ण दिन एवं रात्री निशीय काल तक जारी रहता है। दीपावली का मुहूर्त्त, मंत्र, जाप तथा सिद्धि तंत्र साधना आदि के लिए विशेष रुप से सिद्धिदायक होता है।

दीपावली के दिन प्रातः काल सूर्योदय से पूर्व उठ कर स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ अथवा नवीन वस्त्र धारण करें। घर की स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखें तथा मन में भी स्वच्छ तथा पवित्र विचारो को धारण करें। अधीस्थ कर्मचारी, सेवक गण एवं अतिथिजनों का निश्च्छल भाव से सत्कार करते हुए उपहार और मिष्ठान आदि भेंट करें।

दीपावली का पर्व विशेष रुप से धन की देवी लक्ष्मी जी की पूजा, अनुष्ठान कर उन्हें अनुकूल बनाने के लिए मनाया जाता है ताकि सुख–समृद्धि बराबर बनी रहे और व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहें।

यहाँ कुछ ऐसी विधियां प्रस्तुत हैं जिन्हें व्यवहार में लाकर धन सम्बन्धी मुसीबतों से छुटकारा पाया जा सकता है।

1. दीपावली पर श्री महालक्ष्मी पूजन के बाद श्री सूक्त का पाठ 11 बार करें व लक्ष्मी यंत्र पर रोजाना इत्र लगायें। दीपावली की रात्रि लक्ष्मी यंत्र पर कमल के पुष्प अर्पित करें। कमलगट्ठे की माला से लक्ष्मी मंत्र का जाप करें।

2. धन तेरस के दिन सिद्ध कुबेर यंत्र की स्थापना तिजोरी में करें व रुद्राक्ष की या स्फटिक की माला से मंत्र का जाप करें व पंचोपचार पूजन करें फिर नित्य 1 माला करते रहे।

ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्य दिपतेय
धन धान्य समृद्धि में देहि दापय स्वाहा

3. एक चौकी पर दीपावली की रात्रि लाल वस्त्र विछाकर पारद लक्ष्मी गणेशजी की स्थापना करें। उनका मंत्रोपचार पूजन करें। दीपावली के दिन शुभ मुर्हूत में इन दोनों की युगल पूजा करने से सभी विघन बाधाओं का शमन होता है। व्यापार व नौकरी में अच्छी तरक्की होती है। घर परिवार में सुख समृद्धि एवं मंगल का वास होता है।

4. श्यामा तुलसी के चारों ओर उगने वाली घास को पीले कपड़े में बांधकर दीपावली के दिन अपने कार्यस्थल पर रखने से कार्य में निरन्तर उन्नति होती है व माँ लक्ष्मी की कृपा सदैव बनी रहती है।

5. दीपावली की रात्रि शुभ मुहूर्त में 8 गोमतीचक्र व 8 कौडियाँ पीले सिन्दूर में रखे व लक्ष्मी पूजन के समय स्वयं माँ लक्ष्मी की मूर्ति के सम्मुख रखकर श्री सुक्त का पाठ करें व पंचोपार पूजन करें। भाई दौज के पश्चात् इन्हें लाल वस्त्र में बाँध कर अपने धन के स्थान में रखें। इससे जीवन में सदैव सफलता प्राप्त होती है व घर व व्यवसाय में वरकत बनी रहती

शेष पेज 19 पर.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

पुराणों में महालक्ष्मी का स्वरुप

डा. कविता अग्रवाल
ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरुपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

धन–सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य की अधिष्ठात्री देवी परब्रह्म की आद्यशक्ति भगवती महालक्ष्मी अनादि एवं अनन्तरी हैं। शुद्ध सत्व स्वरुपा भगवती स्वर्ण लक्ष्मी, राजलक्ष्मी जहाँ भी निवास करती है वहाँ सुख–ऐश्वर्य रहता है। देवी लक्ष्मी अपने भक्तों की सम्पूर्ण मनोकामनाओं को पूर्ण करती है। पुराणों के अनुसार समुद्र मंथन के समय श्रीहरि ने भगवती आद्याशक्ति को ही लक्ष्मी के रुप में वरण किया था। तभी से विष्णुप्रिया नारायणी, हरिप्रया आदि नामों से भी जानी जाती है। समुद्र से उत्पन्न होने के कारण उन्हें 'सिधु सुता 'तनया और 'क्षीराब्धि भी कहा जाता है।

कमल का पुष्प हाथ में धारण करने के कारण एवं कमलासन पर आसीन होने के कारण इन्हें 'कमला' 'कमलालिका 'पद्मा' पद्मालया, पद्मासना' आदि नामों से भी जाना जाता है।

हमारे पुराणों में वर्णित कथाओं के आधार पर देवी–देवताओं के मूर्त स्वरुप के उल्लेख मिलते हैं। उस समय मूर्तियो का पूजन आरंभ हो चुका था। देवालय बनाने के नियम भी पुराणों में प्राप्त होते हैं। लक्ष्मी के स्वरुप का विस्तृत वर्णन हमें पौराणिक काल में मिलता है।, साथ ही इनकी मूर्ति की पूजा का विधान भी मिलता हैं।

ब्रह्म पुराण में लक्ष्मीतीर्थ के प्रसंग में लक्ष्मी और निर्धनता में अपनी श्रेष्ठता के लिए अनेक तर्क–वितर्क होते है। अन्त में दोनों गौतमी के पास निर्णय के लिए जाते हैं। वे सब प्रकार की श्री का वर्णन करके कहती है, जहाँ सुन्दरता है, वहीं लक्ष्मी है। विष्णु के वक्षस्थल पर श्रीवत्स के चिंह का भी विवरण यहीं प्राप्त होता है। लक्ष्मी एवं श्रीविष्णु का क्रीड़ा–स्थल द्रोण पर्वत बताया गया है।

पद्मपुराण में में विष्णु को श्रिया युक्त भी कहा है। इनके अनेक नामों में श्रीपति, श्रीधर, श्रीनिवांस, श्रीद् नाम मिलते है। इसमें भी विष्णु के वक्ष–स्थल पर श्रीवत्स का चिंह प्राप्त होता है। **'श्री' अर्थात् लक्ष्मी।**

विष्णु पुराण में लक्ष्मी दक्ष की पुत्री बताई गई है, जिनका विवाह धर्म से हुआ था। इनकी दूसरी उत्पत्ति भृगु और ख्याति से बताई जाती है। इनके जन्म के विषय में तीसरी कथा क्षीर सागर से उत्पन्न होने की मिलती है। समुद्र–मंथन से निकले चौदह रत्नों में एक लक्ष्मी भी थी। क्षीरसागर नें इन्हें पदम् की माला दी और विश्वकर्मा नें इन्हें विभिन्न आभूषण प्रदान किए। लक्ष्मी ने श्रीहरि के गले में माला डालकर वरण किया। यदि श्रीविष्णु जगत् पिता आदि पुरुष हैं, तो लक्ष्मी नित्य जगन्माता। लक्ष्मी ऋद्धि है, तो विष्णु कुबेर हैं, यदि लक्ष्मी इन्द्राणी है, तो विष्णु इन्द्र है इन्होंने ही सीता के रुप में पृथ्वी से जन्म लिया और रुक्मिणी के रुप में भी। उन्होंने जब–जब शरीर धारण किया, विष्णु को ही अपना स्वामी बनाया।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में स्वर्ग की लक्ष्मी, गृहलक्ष्मी, राज्यलक्ष्मी, आदिति, वैष्णवों की वैष्णवी आदि कई रुपों में लक्ष्मी का वर्णन मिलता है। कृष्ण के मन से उनकी उत्पत्ति का उल्लेख मिलता है। जो पीताम्बरा हैं और सुन्दर आभूषणों से सुसज्जित हैं, जो धन–वैभव की देवी हैं एवं हरि के पृष्ठ भाग में स्थित है। अन्य पुराणों के समान ही इसमें भी सरस्वती, गंगा, और लक्ष्मी के झगड़े का प्रसंग भी मिलता है, जिसके कारण इन तीनों को पृथ्वी पर आना पड़ा। इसमें इन तीनों को हरि की पत्नी बताया हैं शाप के कारण लक्ष्मी ही तुलसी बनी। इस प्रकार ब्रह्मवैवर्त में इनके जन्म से संबंधित अनेकानेक कथाएँ मिलती है।

श्रीमद्भागवत् पुराण में 'श्री' अर्थात् लक्ष्मी विष्णु की सेवा करती हुई बैकुण्ठ में दिखाई देती है। इसमें भी समुद्रमंथन की कथा का उल्लेख मिलता है, कि उनकी आभा से सभी दिशाएँ प्रकाशित हो गई थीं। इनके अभिषेक और हाथ में कमल का भी वर्णन मिलता है। विश्वकर्मा के दिए गए आभूषणों से वे सुशोभित हो रही है।

लिंग पुराण में भी लक्ष्मी की उत्पत्ति समुद्र–मंथन से बतायी है, परन्तु अलक्ष्मी उनकी की उत्पत्ति पहले हुई, बाद में लक्ष्मी

शेष पेज 20 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरेज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा
डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

करवा चौथ व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

करवा चौथ व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी को किया जाता है। इस व्रत में चन्द्रोदय व्यापिनी तिथि को ग्रहण किया जाता है। विवाहित स्त्रियों के लिए यह व्रत अखण्ड सौभाग्य को देने वाला है। विवाहित स्त्रियाँ इस दिन अपने प्राण बल्लभ की दीर्घायु एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करके भगवान रजनीश (चन्द्रमा) को अर्घ्य अर्पित कर व्रत को पूर्ण करती है। इस व्रत में रात्रि बेला में शिव पार्वती, स्वामीकार्तिकेय, गणेश, चन्द्रमा के चित्रों एवं सुहाग की वस्तुओं की पूजा का विधान है। इस दिन निर्जल व्रत रहकर चन्द्र दर्शन व चन्द्रमा को अर्घ्य अर्पण कर भोजन ग्रहण करना चाहिए। पीली मिट्टी की गौरा भी बनायी जाती है। कोई–कोई स्त्रियाँ परस्पर चीनी या मिट्टी का करवा आदान प्रदान करती हैं। लोकाचार में कई स्त्रियाँ काली चिकनी मिट्टी के कच्चे (बिना पकाए हुए) करवे में चीनी की चासनी बनाकर डाल देती है अथवा आटे को घी में सेककर चीनी मिलाकर लड्डू आदि बनाती हैं। पूरी–पुआ व विभिन्न प्रकार के पक्वान्न भी इस दनि बनाए जाते हैं। सभी सुहागिन स्त्रियाँ और जिनका विवाह हो गया है वे कन्यायें भी उसी वर्ष इस व्रत का शुभारम्भ करती हैं। चौथ का व्रत इसी चौथ से ही प्रारम्भ कराया जाता है। इसके बाद ही अन्य महीनों के व्रत करने की परम्परा है। नैवेद्य (भोग) में से कुछ पक्वान्न ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित दान करें तथा अपनी सासू माँ के लिए भी 13 लड्डू, एक लोटा, एक वस्त्र एक करवा कुछ पैसे रखकर चरण छूकर दे दें। शेखावाटी (राजस्थान) में एक विशेष परम्परा हैं शेखावाटी में कुम्हारें के यहाँ से करवा लाकर गेहूँ या बाजरा से भर कर साथिया करके आटे की बनी हुई 13 मीठी टिक्की (टिकिया) एक गुड़ की डेली और चार आने के पैसे या श्रद्धानुसार विवाह की साल लड़की अपने टीका चावल लगाकर 13 गेहूँ के दाने हाथ में लकर कहानी सुन लें। करवा तथा पानी का लोटा रोली पाटे पर रखे। कहानी सुनकर करवा अपनी सास को पैरों पडकर दे दे। सास ना हो तो मन्दिर में चढ़ा दें।

उद्यापन करें तो 13 सुहागिनी स्त्रियो को जिमावें। 13 करवा करें 13 जगह सीरा पूड़ी रखकर हाथ फेरे। सभी पर रूपया भी रखें बायना तो जीमने वाली स्त्रियों को परोस देवे। रुपया अपनीसास को दे दे। 13 करवा 13 सुहागिनी स्त्रियों को भोजन कराने के बाद दे दें।

वास्तव में करवा चौथ का व्रत भारतीय संस्कृति के उस पवित्र बन्धन व प्यार का प्रतीक है जो पति–पत्नी के बीच होता है। भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर माना गया है। यह व्रत पति–पत्नी दोनों के लिए नव प्रणय निवेदन और एक दूसरे के प्रति हर्ष, प्रसन्नता, अपार प्रेम, त्याग एवं उत्सर्ग की चेतना लेकर आता है। इस दिन स्त्रियाँ नव बधू की भाँति पूर्ण श्रृंगार कर सुहागिन के स्वरुप में रमण करती हुई भगवान् रजनीश से अपने अखण्ड सुहाग की प्रार्थना करती है।

स्त्रियाँ श्रृंगार करके ईश्वर के समक्ष व्रत के बाद यह प्रण भी करती है कि वे मन, वचन एवं कर्म से पति के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना रखेगी तथा अपने इसी जीवन में धर्म के मार्ग का अनुसरण करती हुई धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष चारों पुरुषार्थो को प्राप्त करेंगी।

कुँआरी कन्यायें इस दिन गौरा देवी का पूजन करती हैं। शिव पार्वती के पूजन का विधान इसलिए भी है कि जिस प्रकार शैलपुत्री पार्वती ने घोर तपस्या करके भगवान् शंकर को प्राप्तकर अखण्ड सौभाग्य प्राप्त किया वैसा ही उन्हें भी प्राप्त हो। इस सन्दर्भ में एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार पाण्डवों के बनवास के समय जब अर्जुन तप करने इन्द्रनील पर्वत की ओर चले गए तो बहुत दिनों तक उनके वापिस ना लौटने पर द्रौपदी को चिन्ता हुई तब श्री कृष्ण ने आकर द्रोपदी की चिन्ता दूर करते हुए करवा चौथ का व्रत बताया तथा इस सम्बन्ध में जो कथा शिवजी ने पार्वती को सुनायी

शेष पेज 19 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

कूर्म पृष्टीय श्रीयंत्र

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

श्री यंत्र नाम से ही स्पष्ट है यह श्री अर्थात् लक्ष्मी जी का यंत्र है। इस यंत्र में लक्ष्मी का साक्षात् वास माना गया है। लक्ष्मी जी स्वंय कहती है श्रीयंत्र तो मेरा आधार है। इसमें मेरी आत्मा वास करती है। श्री यंत्र सभी यंत्रों में श्रेष्ठ माना गया है। इसीलिए यंत्र राज भी कहते हैं।

कूर्म पृष्टीय श्री यंत्र अर्थात् यह भी यन्त्र जो कछुए की पीठ पर बना होता है अत्यन्त दुर्लभ है माना जाता है। कछुआ दीर्घ आयु व निरोगी जीवन का प्रतीक माना जाता है तथा उस पर बना श्रीयंत्र इस बात का द्योतक है कि अमुक घर में लक्ष्मी का वास हो तथा घर के सभी सदस्य निरोगी रहें व दीर्घायु को प्राप्त हो। भगवान विष्णु ने स्वंय कच्छप रुप में पृथ्वी पर अवतार लिया था कूर्मपृष्टय श्रीयंत्र भगवान विष्णु तथा उनकी पत्नी मां लक्ष्मी के साथ–साथ होने का भी द्योतक है।

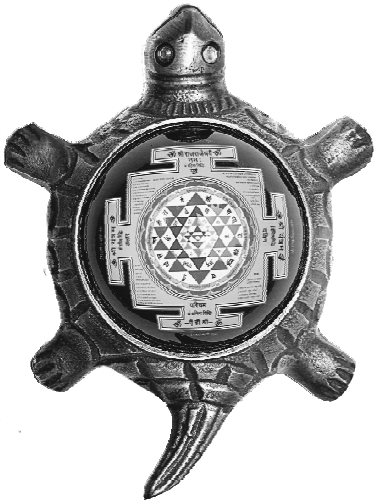

दीपावली के शुभ अवसर पर यदि हम अपने व्यवसायिक स्थलों व घरों में कूर्मपृष्टीय श्रीयंत्र की स्थापना विधिवत् ढंग से मंत्रोपचार पूजन के साथ करते हैं तो वर्ष भर हमारे ऊपर माता लक्ष्मी की कृपा के साथ भगवान विष्ण का भी आर्शीवाद बना रहता है।

कूर्मपृष्टीय श्रीयंत्र स्फेटिक, स्वर्ण, रजत, ताबाँ पीतल, आदि ऐसी शुद्ध धातुओं में उपलब्ध होता है। हम अपनी सामर्थयनुसार इस यंत्र की स्थापना अपने निवास एवं व्यवसायिक स्थल पर कर सकते हैं।

श्री यंत्र को सब यंत्रों में श्रेष्ठ माना गया है श्रीयंत्र की रचना भी अनोखी है। पाच त्रिकोण के नीचे के भार के ऊपर चार त्रिकोण जिनका ऊपरी भाग की तरफ है इस संयोजन से 43 त्रिकोण बनते हैं। इन 43 त्रिकोणों को घेरे हुए दो कमल है पहला कमल अष्टदल है दूसरा बाहरी कमल षोडसदल का है इन दो कमलों के बाहर तीन वृत हैं इसके बाहर तीन चौरस है जिन्हें भूपुर कहते हैं।

यंत्रों में जो भी अंक लिखे जाते है या आकृतियां बनी हुई होती है वे देवी देवताओं की प्रतीक होती है वैसे यंत्रों की उत्पत्ति भगवान् रुद्र के प्रतयकारी नृत्य तांडव से मानी जाती है।

कूर्म पृष्टीय श्रीयंत्र की शक्ति इतनी प्रभावशाली होती है कि उनके दर्शनमांत्र से ही सकारात्मक परिणाम मिल सकते है। नियमित रुप से इसके दर्शन करने से शुभ कर्म सम्पन्न होते रहते हैं।

हिन्दुधर्म में विभिन्न पीठों में शंकराचार्य इस यंत्र का पूजन नियमित रुप से करते है। हिन्दू धर्म के सभी ज्ञानी संत, महापुरुष, धर्माचार्य, महामण्डलेश्वर, योगी, तांत्रिक, सन्यासी आदि सभी अपने पूजन स्थल में इस यंत्र को प्रमुखता से रखते आये हैं।

पूजा स्थल, कार्यलय, दुकान, कारखाना, पढ़ाई का स्थान आदि पर इसे स्थापित वत्से से धन धान्य में वृद्धि होती है तथा व्यापार में लाभ व पढ़ाई में सफलता प्राप्त होती है।

❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

यंत्रों को पुन: सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

गोमती चक्र के अचूक प्रयोग

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

यह एक दुर्लभ वस्तु है और आसानी से प्राप्त नहीं होता। यह एक सफेद टुकड़ा होता है। जिस पर एक चक्र सा बना होता है। यह चक्र स्वतः प्रकृति द्वारा निर्मित होता है। होली पर अथवा ग्रहण काल में साधक को चाहिए कि ऐसा गोमती चक्र अपने सामने रख ले और उस पर निम्न मन्त्र की ग्यारह मालाएँ फेरें–

ऊँ वं आरोग्यानिकरी रोगानशेषानम:

इस प्रकार जब ग्यारह मालाएं सम्पन्न हो जायें तब साधक को वह गोमती चक्र सावधानी पूर्वक एक तरफ रख देना चाहिए। यह सिद्ध गोमती चक्र तीन वर्ष तक प्रभाव युक्त रहता हैं।

इसका प्रयोग बीमारी पर विशेष रुप से किया जाता है। कोई बीमार हो तो एक साफ गिलास में शुद्ध जल लेकर उसमें यह गोमती चक्र डाल दें और ऊपर लिखे मंत्र को इक्कीस बार मन ही मन उच्चारण कर उस गोमती चक्र को बाहर निकाल दें तथा वह पानी रोगी को पिला दें तो वह रोगी आश्चर्यजनक रुप से स्वस्थ होने लगता है।आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा प्रयोग किसी भी प्रकार के रोगी पर किया जा सकता है। तीन वर्ष के बाद इस प्रकार के गोमती चक्र को पुनः सिद्ध किया जा सकता है।

1. यदि इस गोमती चक्र को लाल सिन्दूर की डिब्बी में घर में रखें तो घर में सुख शांति बनी रहती है।

2. यदि घर में भूत–प्रेतों का उपद्रव हो तो दो गोमती चक्र लेकर घर के मुखिया के ऊपर घुमाकर आग में डाल दें तो घर से भूत–प्रेत का उपद्रव समाप्त हो जाता है।

3. यदि घर में बीमारी हो या किसी का रोग शांत नहीं हो रहा हो तो 11 गोमती चक्र लकर उसे चाँदी में पिरोकर रोगी के पलंग के पाये पर बाँध दें, तो उसी दिन से रोगी का रोग समाप्त होने लगता है।

4. व्यापार वृद्धि के लिए 11 गोमती चक्र लेकर उसे बॉधकर ऊपर चौखट पर लटका दें, और ग्राहक उसके नीचे से निकले, तो निश्चय ही व्यापार में वृद्धि होती है।

5. प्रमोशन नहीं हो रहा तो एक गोमती चक्र लेकर शिव मंदिर में शिवलिंग पर चढ़ा दें, निश्चय ही प्रमोशन के रास्ते खुल जाते हैं।

6. पति–पत्नी में मतभेद हो तो तीन गोमती चक्र लेकर घर के दक्षिण में हलूं बलजाद कहकर फेंक दें, मतभेद समाप्त हो जायेगा।

7. पुत्र प्राप्ति के लिए 11 गोमती चक्र लेकर किसी नदी या तालाब में ''हिलि हिलि मिलि मिलि चिलि चिलि हुक'' पाँच बार बोलकर विसर्जित करें, पुत्र प्राप्त की संभावनाएँ बढ़ जाती है।

8. यदि बार–बार गर्भ गिर रहा हो तो दो गोमती चक्र लाल कपड़े में बाँधकर कमर में बाँध दें तो गर्भ गिरना बंद हो जाता है।

9. यदि शत्रु बढ़ गये हो तो तीन गोमती चक्र लेकर उस पर शत्रु का नाम लिखकर उन तीनों गोमती चक्र लेकर उस पर शत्रु का नाम लिखकर उन तीनों गोमती चक्रों को जमीन में गाड़ दें तो शत्रु परास्त रहते हैं।

10. यदि कोई कचहरी जाते समय घर के बारह गोमती चक्र रखकर उस पर दाहिना पाँव रखकर जावे तो उस दिन कोर्ट–कचहरी में सफलता प्राप्त होती है।

11. राज्य में सम्मान प्राप्ति के लिए दो गोमती चक्र किसी ब्राह्मण को दान में दे दें तो राज्यमें अटके हुए कार्य पूरे हो जाते है।

12.यदि गोमती चक्र चाँदी में जड़वा कर बच्चे के गले में पहना दिया जाये तो बच्चे को नजर नहीं लगती और वह स्वथ बना रहता है।

13.यदि 21 गोमती चक्र दीपावली के दिन पूजा घर में स्थापित करें और उन्हें लक्ष्मी मानकर पूजन अर्चन करें तो उसके जीवन में निरन्तर उन्नति बनी रहती है।

14. यदि स्वास्थ्य ठीक नहीं हो तो 11 गोमती चक्र अपने सिर पर घुमा कर किसी ब्राह्मण या फकीर को दान में दे दें, तो रोग उसी क्षण से समाप्त होना शुरु हो जाता है।

15. यदि 51 गोमती चक्र लाल पोटली में बाँधकर दुकान में किसी भी स्थान पर रख दें तो जब तक वह पोटली दुकान में रहेगी तब तक निश्चय ही व्यापार में उन्नति होती रहेगी या व्यापार रुक गया है तो वापस प्रारम्भ हो जायेगा। व्यापार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आयेगी। ❋❋❋

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

दीपावली-पँचपर्व त्यौहार

श्री श्री भगवान पाराशर
कर्मकाण्ड विशेषज्ञ

देव भूमि भारत में भारतीय सदियों से अपनी–अपनी आस्थानुसार विभिन्न देवी देवताओं को पूजते है। परन्तु सम्पूर्ण पर्वो में दीपावली अनोखा पर्व है। दीपावली के आगमन से संपूर्ण वातावरण अपने आप ही जगमगा उठता है। दीपावली का पर्व पाँच पर्वो को मिलाकर अपने आप में पूर्ण होता है। जिसमें प्रथम **"धनतेरस"** द्वितीय **"नरक चतुर्दशी"** तृतीय महापर्व **"दीपावली"** चतुर्थ **गोवर्धन पूजा"** तथा पंचम् **"भाई दौज (यम द्वितीया)"** है। इन पाँचों पर्वो को मिलाकर ही दीपावली का पंचपर्व त्यौहार मनाया जता है।

1. **धनतेरस–**यह त्यौहार कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को मनाया जाता है। धनतेरस पर्व ही दीपावली पर्व के आगमन की सूचना देता है। इस दिन लक्ष्मी जी का आगमन होता है। अतः इस दिन नये बर्तन खरीदना, सोना, चाँदी आदि को धन की देवी लक्ष्मी का स्वरुप मान कर खरीदते है। क्योंकि धातु में लक्ष्मी का वास माना जाता है। इसी दिन बैद्य राज धन्वंतरी वैद्य समुद्र मंथन से अमृत कलश लेकर उत्पन्न हुये थे इसलिए इसे धन्वंतरी जयंती पर्व के रुप में भी मनाते है। इस दिन बैदिक देवता यमराज का पूजन करना विशेष महत्व रखता है। इस दिन महिलाए तेल का चौमुखा दीपक दान करती है जिससे घर में अकाल मृत्यु का भय समाप्त होता है। तथा इस दिन वरुण जल के देवता का भी पूजन होता है।

2. **नरक चतुर्दशी–**कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी का पावन पर्व मनाया जाता है। कहा जाता है इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का संहार किया था इसलिए इसका नाम नरक चतुर्दशी पड़ गया। इस दिन नरक से मुक्ति पाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। तथा यमराज के लिए सायंकाल तेल के दीपक दान किये जाते है। तथा इसदिन तेल–हन्दी का लेप कर अपामार्ग के पौधे साहित स्नान करने से भी नरक से मुक्ति मिलती है तथा स्नान न करने से पुराणानुसार एक वर्ष के पुण्य नष्ट हो जाते है तथा इस पर्व सफाई व स्वच्छता से जोड़ा गया है। इस दिन तन–मन व घर की सम्पूर्ण सफाई की जाती है। तभी लक्ष्मी जी का वास सदैव घर में बना रहता है। इस पर्व को छोटी दीपावली के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। इस दिन सौन्दर्य स्वरुप भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन सौन्दर्य प्राप्ति के लिए किया जाता है। इसलिए इसे "रुप चौदस" नाम से भी जाना जाता है।

3. **दीपावली–**कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की अमावस्या वाले दिन यह पावन महापर्व सायंकाल में विशेष रुप से मनाया जाता है। तथा दिन भर शुभ मुहूर्त व चौघडियाँ में व्यवसाय स्थल आदि स्थानों पर पूजन किया जाता है। इस दिन लक्ष्मीजी, कुबेरजी, सरस्वतीजी, कालीजी व विशेष रुप से बुद्धि प्रदाता गणेशजी का पूजन होता है।

दीपावली पर्व को मनाने की कई मान्यताएँ है। परन्तु अधिकांश लोगों की मान्यता है कि इस दिन राजा राम चन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास भोगकर अयोध्या वापस आये थे। इसी खुशी से अयोध्यावासियों ने घर–घर दीपक जलाये थे तथा एक सप्ताह तक प्रकाश करके यह खुशी मनायी थी इसलिए इस दिन प्रकाश करके प्रतिवर्ष यह खुशी दोहराते है। वैज्ञानिक दृष्टि से दीप जलाने से रोग उत्पन्न करने वाले कीटाणु नष्ट होते है तथा घर की व शरीर की साफ–सफाई करके स्वस्थ्य शरीर की कामना की जाती है इस पर्व के बहाने प्रत्येक घरों में साफ सफाई होती है तथा गन्दगी बाहर की जाती है।

इस दिन मान्यतानुसार अर्धरात्रि को लक्ष्मीजी अपने वाहन उल्लू पर सवार होकर भ्रमण करती है उन्हें अन्धकार पसन्द नहीं है। इसलिए दीप जलाकर नाना प्रकार के भोग खील खिलौने मिष्ठान आदि रखकर तथा घर के द्वारों को खोलकर रखा जाता है जिससे लक्ष्मीजी सहजता से प्रवेश कर सकें। इसदिन घर में नवीन लक्ष्मी–गणेशजी की प्रतिमा लाकर रोली चावल आदि षोडशोपचार पूजन किया जाता है तथा लक्ष्मी यंत्र, श्रीयंत्र, आदि की स्थापना की जाती है। बहीखाते पर सरस्वतीजी की व कलम पर काली माता की व तिजोरी पर कुबेर भगवान का पूजन किया जाता है तथा तिजोरी में धन प्रदायक वस्तुएँ गोमती चक्र, कौड़ी कमलगट्टा व अन्य कई प्रकार की वस्तुएँ रखी जाती है। सम्पूर्ण सामग्री का पैकेट भविष्य दर्शन कार्यालय से प्राप्त कर सकते है।

4. **गोवर्धन पूजा–**(अन्नकूट) कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा वाले दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। प्राचीन युग में इस दिन इन्द्र, वरुण और अग्निपूजन किया जाता था जिससे वे प्रसन्न होकर वर्षा करते रहें जिससे अन्न प्राणियों के लिए व चारा पशुओं के लिए प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता रहें। परन्तु द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने इन्द्र का घमण्ड दूर

शेष पेज 20 पर.....

दीपावली पूजन विधि

श्री गणेशजी एवं लक्ष्मीजी की मूर्तियाँ अथवा चित्र, रोली, चावल, फूलमाला, पान, सुपारी, लौंग, छोटी इलायची, कलावा, धूपबत्ती, कपूर, रूई, घी, माचिस, मीठा तेल, खील-बतासे, पंच मेवा, खाँड़ के खिलौने, मिठाई, नुक्ती के लड्ड,फल, गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, बूरा, जनेऊ, घिसा हुआ चन्दन, रोली, बसने की पुड़िया, गोला, नारियल पानी वाला, वस्त्र चढाने वाले और रूपये थाली में सजा कर रखें।

श्री हनुमान जी

श्री सरस्वतीजी	श्री लक्ष्मीजी	श्री गणेशजी
महा धनदाता लक्ष्मी यंत्र	कमलगट्टा की माला	मनोकामना पूर्ति यंत्र
कनकधारा यंत्र	श्री यंत्र	कुबेर यंत्र
दक्षिणवर्ती शंख	गोमती चक्र	कोड़ी

भवन के मुख्य द्वार पर

॥ श्री गणेशाय नमः श्री महालक्ष्म्यै नमः॥

शुभ 卐 लाभ

सिन्दूर में घी मिलाकर अनामिका जिसमें अंगूठी पहनते है उस उंगली से लिखें। एक साबुत बताशा सतिये के बीच में चिपका दें।

दीपावली पूजन कैसे करें

दीपावली लक्ष्मी जी का पर्व माना गया है। प्रत्येक कार्य की पूर्ति के लिये लक्ष्मी (धन) आवश्यक है, इस पूजा विधि का आधार यही मंत्र है।

मंन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरः।
यत्पूजितं मया देव पूरिपूर्ण तदस्तु मे ।।

मंत्र का सरल भाव है कि मै मंत्र, क्रिया, विधि और भक्ति आदि नहीं जानता हूँ जैसे भी आपकी पूजा की है आप उससे प्रसन्न होकर मेरा कल्याण करें।

पूजा विधि: सबसे पहले स्नान करके नया जनेऊ पहने, नये अथवा धुले हुए कपड़े पहने, टोपी लगावें। पूरब-पश्चिम अथवा उत्तर की ओर मुँह करके अपने आसन पर बैठ जायें। पत्नी को सीधे हाथ की ओर बैठावें। चुटिया में गांठ लगावें। चुटिया न होने पर चुटिया के स्थान को छू लें।

अपने सामने चौकी या पटरा अथवा जमीन पर अपने सीधे हाथ की ओर गणेश जी एवं उल्टे हाथ की ओर लक्ष्मी जी को चावल डाल कर विराजमान करें। उलटे हाथ की ओर घी का तथा सीधे हाथ की ओर मीठे तेल का (तिल का तेल) दीपक चावल डालकर रख दें।

अपने सामने पूजन की थाली, पंचपात्र आचमनी कटोरी, चम्मच आदि रख लें। दोनों दीपक एवं धूपबत्ती जलावें। चावल हाथ में लेकर हाथ जोड़ें और कहें- **'हे दीपक देवता** जब तक हम पूजन करें तब तक आप जलते रहना। चावल दीपकों के पास चढ़ा दें।

पान अथवा चम्मच से सबके ऊपर **ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय** कहकर पानी छिड़क दें। इसे पवित्रकरण कहते हैं। उल्टे हाथ से सीधे हाथ में जल लें और ओउम् नमो भगवते वासुदेवाय कह कर तीन बार पी लें। (पानी पीकर सिर पर हाथ नहीं रखें) हाथ धो लें। यह आचमन है। जरा से चावल उल्टे हाथ में रखकर सीधे हाथ से ढक लें दस बार **''ओउम्''** कहें और अपने चारों ओर छोड़ दें इसे दिशा पूजन अथवा दिग्बन्धान कहते है।

नवग्रह की पूजा करें। चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। लड्डू, मिठाई, खील-बतासे चढ़ा दें।

गणेशजी विघ्नविनाशक, बुद्धि और विवेक के देवता हैं हर काम में सर्वप्रथम इनका पूजन किया जाता है। गणेश जी के पूजन का भाव है हम बुद्धि से धन अर्जित करें एवं विवेक से उसे खर्च करें। बुद्धिहीनता, अविवेकी ढंग, गलत तरीके से न तो धन कमायें न इस प्रकार खर्च करें।

ॐ एकदन्ताय विदमहे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रयोदयात्॥ अथवा **श्री गणेशाय: नमः** कहकर गणेश जी पर चावल छोड़ दें।

प्रत्येक पूजा में गणेश जी के आवाह्न के बाद संकल्प करने की परम्परा है। यह संकल्प क्या है ? जब हमारे मन में कोई विचार उठता है तब बुद्धि एवं हृदय से स्थिर (पक्का) करते हैं। ब्रह्माण्ड (मस्तिष्क) ने शरीर के अंगों को प्रेरित किया और विचार कार्य रूप में बदल जाते हैं। इसे संकल्प कहते हैं। अच्छे कार्य उद्घोषणापूर्वक किये जाते हैं। कुकृत्य (बुरे काम) छिपकर करने का मन होता है कोई देख न ले अच्छे संकल्प करने से मनोबल बढ़ता है, दैवीय शक्तियों का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता है। संकल्प में सम्वत, मास, पक्ष, तिथि, दिन, पर्व, गोत्र एवं नाम बोलकर अहम्‌करिष्ये कहा जाता है।

सीधे हाथ में जल, चावल, फूल, रुपये रखें पत्नी साथ हों तो उनका हाथ अपने हाथ के नीचे लगावें, बोलें-श्री विष्णु, श्री विष्णु, श्री विष्णु। शुभ सम्वत् 2066, कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां शनिवासरे अमुक गोत्रेत्पन्न (गोत्र और अपना नाम बोलें) पत्नी साथ हो तो सप्तनीकोहम् परिवार हो तो सपरिवारस्योहंम, (यदि मित्र मण्डली हो तो)इष्टमित्रसहितोहम्। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं स्थिर लक्ष्मी प्राप्ति हेतु गणेश लक्ष्मी पूजनम् अहम करिष्ये। ऐसा कहकर हाथ में रखी वस्तुएँ गणेश जी के समीप रख दें। अब हाथ में चावल लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करें।

ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु पत्नि च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात् अथवा ॐ श्रीं लक्ष्म्यै नमः ॥ कहकर लक्ष्मी जी पर चावल चढ़ावें।

आवाहन्- सर्व सिद्धि की अधिष्ठात्री देवी धन धान्य समृद्धि दाता माँ मेरे इस स्थान पर आकर आसन पर विराज कर मेरे द्वारा की जाने वाली पूजा स्वीकार करें। पुष्पासनम् सर्मपयामि बोल कर चावल, फूल चढ़ा दें। एक दौने में फूल, चावल, जल गणेश जी -लक्ष्मी जी के आगे रखकर कहें अर्घ्यम समर्पयामि गंगाजल (पानी) डौने में रखकर कहें ''आचमनीयम् समर्पयामि ''तदन्तर शुद्ध जल से स्नान करावें।'' स्नानम् समर्पयामि ''इसके बाद पारद के गणेश जी -लक्ष्मी जी या चाँदी का रूपया कटोरे में रखकर दूध, दही, घी, शहद एवं बूरा इच्छानुसार चढ़ावें और कहें'' पंचामृत स्नानम् समर्पयामि ''शुद्ध जल से स्नान करावें'' स्नानम् समर्पयामि ''वस्त्र से पोंछकर पात्र में रख लें और नवीन (नया) वस्त्र पहनावें'' वस्त्रम् समर्पयामि ''मंगल प्राप्ति हेतु मंगलसूत्र (मौली) चढ़ावें'' मंगल सूत्रम् समर्पयामि ''गणेश जी को जनेऊ पहनावें'' यज्ञोपवीतम् समर्पयामि ''लक्ष्मी जी को मोती की माला पहनावें'' मुक्ता मालाम् समर्पयामि ''गणेश जी पर चन्दन लक्ष्मी जी पर रोली'' गंधम् समर्पयामि ''चावल लगावें'' अक्ताम् समर्पयामि ''फूलमाला पहनावें''

शेष पेज 19 पर...............

श्री दाता श्री यंत्र

श्रीमति रेनू कपूर
आगरा

महालक्ष्मी का सर्वाधिक प्रिय यंत्र श्रीयंत्र की साधना का शास्त्रों में पुराणें में अत्यन्त गोरवपूर्ण वर्णन मिलता है श्री यंत्र को ही लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। त्रिपुरोपनिषद ललिता सहस्रनाम आदि प्राचीन पुराणों में लक्ष्मी स्वयं कहती है कि श्रीयंत्र मेरा प्राण, मेरी आत्मा, मेरी शक्ति व मेरा ही स्वरुप है मैं श्रीयंत्र के ही प्रभाव से इस लोक में निवास करती हूँ। श्री यंत्र में सभी देवी देवताओं की आमूहिक अदृश्य शक्ति विद्यमान रहती है इसी कारण इसे यंत्रराज व यंत्र शिरोमणि भी कहा जाता है। ऋषि दत्तात्रेय व दुर्वासा ऋषि ने ही यंत्र को मोक्षदाता माना है।

जिस प्रकार शरीर व आत्मा एक दूसरे के पूरक है उसी प्रकार देवता व उनके यंत्र भी एक दूसरे के पूरक है यंत्र को देवता का शरीर ओर मंत्र को यंत्र की आत्मा कहा गया है। यंत्र और मंत्र दोनों की साधना मिलकर अतिशीघ्र फल देती है।

मंत्रों का जाप व्यक्ति को शान्त व समद्ध बनाता है यंत्र ही व्यक्ति को मंत्रणा प्रदान करता है और मंत्र के अभिमंत्रण से साहक किसी भी व्यक्ति वस्तु व स्थान को सुरक्षित रख सकता है। जिस प्रकार मंत्र की शक्ति उसके शब्दों में निहित होती है उसी तरह यंत्र की शक्ति उसकी रेखाओं व बिन्दुओं में होती है। कोई भी पूजा पाठ व अनुष्ठान बिना मंत्रों के असंभव है यंत्रों को भी मंत्रो के द्वारा जाग्रत किया जाता है। यहाँ तक कि तंत्र के द्वारा किये गये कार्य भी मंत्र के द्वारा यंत्र का आधार लेकर किये जाते है।

श्री यंत्र स्वयं में अनेको रहस्यों को समेटे हुये हैं एक बार जब भगवान ने सभी मंत्रों को देत्यों के द्वारा दुरुपयोग से बचाने के लिये कीलित कर दिया था तब महर्षि दत्तात्रेय ने ज्यामितीय कला के द्वारा वत्त त्रिकोण, चाप, अर्धवृत्त, चातुष्कोण आदि को आधार बनाकर बीज मंत्रों से इष्ट शक्तियों की पूजा हेतु यंत्रों का आविष्कार किया दत्तात्रेय को श्रीयंत्र का जनक माना जाता है श्री यंत्र की साधना किसी भी आयु–वर्ग व जाति का साधक कर सकता हैं कयोंकि यह अलोकिक साधना सिद्धि प्रदान करती है।

दीपावली पर्व पर यंत्रराज श्रीयंत्र की पूजा का अतिविशिष्ट महत्व है श्रीयंत्र सम्पूर्ण संसार में भारतीय अध्यात्म की एक अनुपम और सर्वश्रेष्ठ देन माना गया है। शास्त्र के अनुसार श्रीयंत्र की पूजा का शुभ फल ताँबे में सौ गुणा, चाँदी में कोटिगुणा, स्वर्ण व स्फटिक के श्रीयंत्रों में अनन्त गुणा होता है श्रीयंत्र की रचना लकड़ी के पट्टे तथा भोजपत्र पर भी बनाई जा सकती है। प्राचीन राजा महाराजाओं के महल आदि में ऋषि मुनि भोजपत्र पर ही श्रीयंत्र का निर्माण करते थे और वह अत्यधिक प्रभावशाली भी होता था। भोजपत्र पर बने श्रीयंत्र को लक्ष्मी प्राप्ति का रामावाण माना जाता था। श्रीयंत्र निर्धन को भी धनवान बनाने की सार्मथ्य रखता है। शुभ मुहूर्त में प्राणप्रतिष्ठित श्री यंत्र को अपने भवन वाहन व व्यवसायिक स्थल पर स्थापित करने से धन समृद्धि का संबर्धन होने लगता है, दुख, दरिद्रता का नाश होता है।

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि श्रीयंत्र की अदभुत शक्ति के कारण इसके दर्शन मात्र से ही लाभ मिलना शुरु हो जाता है। इस यंत्र को मंदिर में या तिजोरी में पीले वस्त्र पर रखकर प्रतिदिन गुलाव के फूल चढ़ाने से तथा कमलगट्ठे की माला पर श्री सूक्त के बारह पाठ श्री लक्ष्मी मंत्र के जप के साथ करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है और धन संकट दूर हो जाता है श्री यंत्र की चमत्कारी शक्त्यिों की अनुभूति स्वतः ही होने लगती है। श्रीयंत्र का पूजन व्यक्ति के रुके हुये कार्यो को बनाता है और उसके रोगो का शमन करता है। श्री यंत्र के सम्मुख श्रीमंत्रों का नियमित जप व्यक्ति को आर्थिक उन्नति तथा व्यापार में सफलता प्रदान करता है, देवी लक्ष्मी की स्थिरता के लिये यह एक अद्भुत प्रयोग है। कार्तिक मास की अमावस्या तिथि में ग्रह नक्षत्रों के शुभ योग में श्री यंत्र की स्थापना कर शुभ मुहूर्त का लाभ उठायें, महालक्ष्मी की अलौकिक कृपा के पात्र बने सभी पाठकों को दीपावली की शुभकामनायें।

❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

मानव जीवन के सोलह संस्कार

सुरेश अग्रवाल
आगरा

प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्व है, जिनके द्वारा मानवीय गुणों को परिष्कृत कर दोषों को दूर करने का उललेख मिलता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक होने वाले समस्त संस्कार वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं। शास्त्रों में निहित सोलह संस्कार मनुष्य को शारीरिक, आध्यात्मिक व बौद्धिक रुप से पुष्ट करते हैः–

गर्भाधान–गर्भाधान सन्तान प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रथम संस्कार है। इस संस्कार के अनुसार गर्भाधारण से पूर्व प्रसन्न व पवित्र मन से उत्तम सन्तान की प्राप्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना करनी चाहिए। पुराणों में इसके लिए विधि विधान से पूजा का प्रावधान है।

पुंसवन–गर्भपात की आशंका को निर्मूल करने व आने वाला संतान के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु इस संस्कार का विशेष महत्व है। इस संस्कार में वट वृक्ष की छाल का इस उपयोग में लाया जाता है।

सीमांतोन्नयन–विषम परिस्थितियों व बाधाओं के निवारण हेतु यह एक आवश्यक संस्कार है। इसके अन्तर्गत पति अपनी पत्नी के केशों में कंघी कर उसके बालों को संवारता है और उसकी माँग (सीमांत) को पुष्पों और आभूषणों से प्रेमपूर्वक सजाता है।

जातकर्म–शिशु को आध्यात्मिक प्रवृत्ति का बनाने के लिए स्नानादि के पश्चात् उसे पिता की गोद में दिया जाता है, फिर पिता मंत्रोच्चार के साथ दही, घी और शहद के मिश्रण शिशु की जिहूवा पर ऊँ लिखता हैं तत्पश्चात् हवन पूजन करके शिशु की दीर्घायु की कामना की जाती है।

नामकरण– शिशु के जन्म के दसवें दिन से लेकर एक वर्ष के मध्य इस संस्कार को सम्पन्न किया जाता हैं परिवार के कुल देवता के समक्ष पूजा अर्चना करके शिशु के कान में उसका नाम बोला जाता है।

निष्क्रमण–इस संस्कार के अनुसार शिशु को उसके जन्म से चारमहीने के बीच में पहली बार घर से बारह निकाल कर प्रकृति का दर्शन कराया जाता है। इसका उद्देश्य शिशु की ओर से समस्त प्राकृतिक शक्तियों के आगे नमन (प्रणाम) करना है।

अन्नप्राशन–शिशु को छः माह की आयु में प्रथम बार दूध, दही, घी तथा पके चावल का सेवन कराया जाता है। इस अवसर पर शिशु की दीर्घायु की कामना करते हुए बाह्मणों को भोजन करवाया जाता है तथा शिशु को आर्शीवाद दिलवाया जाता है।

क्षौरकर्म–वर्तमान में केश मुण्डन संस्कार सर्व स्वीकार्य है, जिसमें शिशु के गर्भ के केशों का मुण्डन करवायाा जाता है। बालक के सिर के बालों को कटवाकर मात्र शिखा (चोटी) रखी जाती है।

कर्णछिदन–प्राचीन काल में पुत्र व पुत्रियों दोनों के लिए कर्ण छेदन समान रुप से अनिवार्य था, लेकिन वर्तमान में यह आंशिक रुप से आस्तित्व में है। कान छेद कर वाली पहनाने से अण्डकोष व आतंवृद्धि के रोगों से छुटकारा मिलता है।

विद्याध्ययन–बालक के पाँच वर्ष की आयु में अक्षरज्ञान के लिए शिक्षक के पास भेजना भी एक संस्कार है, जिसमें शिक्षक की प्रथम गुरु के भाव से पूजा करवाई जाती है।

उपनयन–इसे जनेऊ यानी यज्ञोपवीत संस्कार भी कहा जाता है। माता–पिता बालक को गुरु के पास ले जाकर वेदमंत्रों के साथ इस संस्कार को सम्पन्न कराते हैं। इस संस्कार से ऋषिऋण, देवऋण व पितृऋण जैसे उत्तरदायित्तवों का ज्ञान करवाया जाता है। यह ब्रह्मचर्य आश्रम का प्रवेश द्वार है।

वेदारंभ–वेद अध्ययन से पूर्व शिष्य अपने गुरु के समक्ष बैठकर माँ सरस्वती की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त करता है। गुरु पूजन हवन आदि करके सभी देवतओं व प्राकृतिक शक्तियों के आगे अपने शिष्य को शरणागत करता है।

केशान्त–गुरु अपनी उपास्थिति में पहली बार शिष्य के दाड़ी मूंछ व सिर के बाल कटवाकर उससे एक दिन का मौन रखवाकर इस संस्कार को सम्पन्न करवाता है।

समावर्तन–शिक्षा समाप्ति के बाद गुरु की आज्ञा लेकर शिष्य अपने घर वापस आता है, फिर माता–पिता की उपस्थिति में वह पुत्र अपने गुरु को भोजन आदि कराकर गुरु दक्षिणा देता है। तदुपरान्त ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति हेतु गुरु से आज्ञा लेता है।

विवाह–संतानोत्पत्ति व गृहस्थ जीवन में प्रवेश कराने वाला यह संस्कार भारतीय संस्कृति में अपना एक विशेष स्थान रखता है, जिसे पति पत्नी एक कर्तव्य के रुप में निभाते हैं। समस्त आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

अंत्येष्टि–निश्चित रुप से यह जीवन का अन्तिम संस्कार है। मृत्यु के बाद ही इस संस्कार की सार्थकता है। मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए अंत्येष्टि के तेरहवें दिन एक पुण्यभोज दिया जाता है। ये वर्तमान मं भी समान रुप से प्रचलित है।

जन्म से लेकर मृत्यु तक मानव जीवन के लिए उपरोक्त सोलह सस्कारों का उल्लेख मिलता है। प्राचीन काल में सभी संस्कार अनिवार्यतः सम्पन्न किय जाते थे, लेकिन वर्तमान में कुछ ही संस्कार व्यवहार में है। मनुष्य की विभिन्न अवस्थाओं और स्थितियों के प्रतीक बने ये संस्कार आज भी उतने ही प्रासंगिक, तर्कपूर्ण और सार्थक है, जितने उस समय हुआ करते थे।

शरीर के सोलह श्रृंगार के बेहतर हैं– जीवन के सोलह संस्कार।

❋❋❋

16 अक्टूबर - 15 नवम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी। कारोबार मे हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। शत्रु प्रबल होगें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। पत्नि सुख की प्राप्ति होगी। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में आपका स्वास्थ्य मधयम रहेगा। नेत्र कष्ट होने की संभावना रहेगी। धन की हानि होना भी संभव हैं। कार्य में हानि होने की सभांवना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेगें।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में आपको हानि होने का भय रहेगा। प्रियजनों से अनबन होने की संभावना रहेगी। नेत्र कष्ट रहेगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। फालतू के विवादो से बचें।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में शरीरिक पीड़ा रहेगी। व्यवसाय मे रूकावटें आयेंगी। सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। सम्पत्ति का लाभ होगा। मित्रों से अनबन होने की स्थिति बनेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–आर्थिक लाभ का सुख प्राप्ति होगा। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। इस मास में स्थान परिवर्तन होने की सभांवना रहेगी। मास के अन्त में हानि होने का भय रहेगा। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। रोग होने का भय रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। व्यर्थ के खर्चे बढ़ जायेंगे। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। सम्पत्ति को लेकर विवाद होगें।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। मास के अन्त में आर्थिक हानि की प्राप्ति होगी। व्यवसाय में हानि होना भी संभव हैं। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। धन लाभ होना भी संभव हैं।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में मानसिक तनाव अधिक रहेगा। फालतू विवादों से परेशान रहेगें। मास के अन्त में धन हानि होने की संभावना रहेगी। व्यवसाय मे रूकावटें आयेगीं। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास मे क्रोध शक्ति मे वृद्धि होगी। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। इस मास में वायु विकार जैसे रोग से ग्रस्त होने की संभावना रहेगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- पत्नि से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की सभांवना रहेगी। इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। इस मास में क्रोध शक्ति की वृद्धि होगी। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अक्टूबर	नवम्बर
16 प्रदोष व्रत **18** काजौगरी व्रत, शरद पूर्णिमा, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्री वाल्मीक जं. **22** करवाचौथ व्रत **27** अहोई अष्टमी **30** रमा एकादशी व्रत **31** श्रीमती इंदिरा गांधी पुण्य दिवस, सरदार बल्लभ भाई पटेल जं	**1** प्रदोष व्रत, धनतेरस **2** नरक चौदश **3** दीपावली (श्री महालक्ष्मी पूजन) **4** श्री गोर्वधन पूजा, (अन्नकूट) **5** भाई दूज **6** विनायक चौथ **7** पाण्डव पंचमी **8** सूर्य षष्ठी **9** जलराम जं. **10** गोपाष्टमी **11** अक्षय नवमी **13** देव प्रबोधनी एका. व्रत, तुलसी विवाह **14** पं. जवाहर लाल नेहरू जन्म दि, बाल दि., प्रदोष व्रत, गरुणद्वादशी (उड़ीसा)

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अक्टूबर – नही है। नवम्बर– 9, 14

गृह प्रवेश मुहूत

अक्टूबर – नही है। नवम्बर– 9, 14, 15

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अक्टूबर–नही है।

नवम्बर– 9, 13, 14, 15

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अक्टूबर– 17

नवम्बर–1, 15,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अक्टूबर	नवम्बर
18 ता. सू.उ. से 26:00 तक	04 ता. 21:21 से 30:09 तक
22ता. सू.उ. से 23 ता.	09 ता. 11:47 से 30:11 तक
30:03 तक	14 ता. 08:37 से 30:15 तक
25 ता. 13:27 से 30:04 तक	15 ता. सू.उ. से 30:14 तक
27 ता. सू.उ. से 19:14 तक	

16 नवम्बर - 15 दिसम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी में बदलाव अधिक आने की संभावना रहेगी। शत्रु आप पर हावी रहेंगे। व्यय अधिक रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– पत्नि से मन-मुटाव होने की संभावना रहेगी। चोट भी लग सकती है। यात्रा में कष्ट आयेंगे। अर्थलाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु आप पर हावी रहेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में मुकदमें में हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी। सारी योजनायें असफल रहेंगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। व्यय अधिक रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में नेत्र कष्ट, वायु विकार, जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। कारोबार में रुकावटें आयेंगी एवं हानि होना भी संभव है। शत्रुओं पर हावी रहेंगे। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में स्वास्थ्य खराब रहेगा। आर्थिक हानि होगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा। कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी। आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– यात्रा में कष्ट एवं कारोबार में रुकावटें आयेगी। सन्तानपक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– वायु विकार, नेत्र कष्ट जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे। आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। नौकरी में हानि होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- सन्तानपक्ष से चिन्तायें लगी रहेगी। प्रियजनों से मेल-जोल बढ़ेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आर्थिक लाभ होगा। कारोबार उत्तम रहेगा। जायदाद संबंधित विवाद उत्पन्न होंगे।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा परन्तु फिर भी हानि का भय लगा रहेगा। व्यय अधिक रहेगा। मास के अन्त में विशेष खर्च होने की संभावना रहेगी। अच्छे लोगों से मेल सूत्र जुड़ेंगे। प्रियजनों से मन-मुटाव की स्थिति बनेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में मन परेशान रहेगा। कारोबार में अधिक बदलाव होने की संभावना रहेगी। योजनायें असफल होंगी। मास के अन्त में कारोबार ठीक होने की संभावना रहेगी।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस मास में आपको प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव की स्थिति बनेगी। मित्रों से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। शत्रु प्रबल होगें। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

नवम्बर	दिसम्बर
16 बैकुण्ठ चौदस **17** पूर्णिमा, गुरुनानक जं **19** इंदिरागांधी जं. **21** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **23** श्री सांई बाबा जं. **26** काल भैरवाष्टमी व्रत **29** उत्पत्ति एकादशी व्रत **30** प्रदोष व्रत	**1** वि. एड्स डे **2** अमा. व्रत, सोम. अमा. **3** डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ज. दि. , विकलांग दि. **4** भा. नौ सेना दि. **5** श्री विना. चतुर्थी **7** भा. झण्डा दिवस **8** चम्मा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी **9** भानु सप्तमी **10** मानवाधिकार दि., दुर्गाष्टमी **11** हरि नवमी, गुरु घासी दास जं. **13** मोक्षदा एका. व्रत **14** प्रदोष व्रत **15** सरदार वल्लभ भाई पटेल पु. दि.

ग्रहारम्भ मुहूर्त
नवम्बर– नही है। दिसम्बर– 12

गृह प्रवेश मुहूर्त
नवम्बर– नही है। दिसम्बर– 12

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
नवम्बर– नही है।
दिसम्बर– नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त
नवम्बर– 20, 28, 29
दिसम्बर– 9, 12, 13

सर्वार्थ सिद्ध योग

नवम्बर	दिसम्बर
18 ता. 13:30 से 30:17 तक 20 ता. सू.उ. से 18:20 तक 21 ता. 21:10 से 30:18 तक 22 ता. सू.उ. से 24:09 तक 30 ता. 10:46 से 30:25 तक	02 ता. 07:43 से 30:26 तक 06 ता. 18:56 से 30:29 तक 07 ता. सू.उ. से 16:52 तक 10 ता. 13:53 से 30:32 तक 12ता. सू.उ. से 13ता. 16:15 तक

ग्वाला और लक्ष्मी

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

किसी गांव मे एक ग्वाल रहता था। वह अत्यन्त ही गरीब था। दिनभर गायें चराता और शाम को उन्हें लेकर वापस आता। उससे इतनी मजदूरी नहीं मिलती कि वह अपने अन्धे माता–पिता तथा छोटे भाई–बहन को ठीक एंग से भरपेट भोजन करा सकता। अतः वह दिन भर उदास रहता तथा स्मरण करता रहता था उसके मन में दृढ़ विश्वास था कि किसी न किसी दिन तो हरि उसकी पुकार सुनेंगे ही। इसी विश्वास के साथ वह अपनी जिन्दगी व्यतीत करता था।

एक दिन मध्यान्ह के समय जब गायें आम के वृक्ष के नीचे विश्राम कर रही थी, वह भी उनके पास बैठा हुआ तरह–तरह की बातें विचार रहा था। सुबह भर पेट भोजन भी नसीब नहीं हुआ, भूख जोरो से लग रही थी, उसने दीन स्वर में हरि स्मरण किया और कहा हे प्रभु मैं कसे दिन देख रहा हूँ? सुबह–शाम ईमानदारी से मेहनत करता हूँ और फिर भी भरपेट भोजन नसीब नहीं होता। उसकी आंखों से आंसू बहने लगे वह जोर–जोर से रोने लगा। उधर हरि भी लक्ष्मी के साथ मृत्युलोक का भ्रमण करने निकले थे कि ग्वाले का करुण क्रन्दन लक्ष्मी के कानों में पड़ा। लक्ष्मी ने उसी समय भगवान विष्णु से गरुड़ रुकवाया और उतर कर उसी दिशा में चली जिधर से रोने की आवाज आ रही थी।

लक्ष्मी ने ग्वाले के निकट जाकर पूछा तो ग्वाले ने रोते हुए सारी बात लक्ष्मी से बता दी। लक्ष्मी ने उसके भोले स्वभाव एवं निष्कपट हृदय को देखकर कुछ बीज देकर कहा–इन्हें बरसात में बो देना। ये उगेंगे। और इनमें बालियां लगेंगी। उन बालियों का रंग मरी देह के सामन पीला होगा। फूलों की सी महक होगी, पकने पर उन्हें काट लेना। तुम्हारे सारे दुख दूर हो जायेंगे। इतना कह कर लक्ष्मी विष्णु के साथ आगे चल दी।

समय पर बरसात हुई, ग्वाले ने लक्ष्मी के बतलाये अनुसार बीज जमीन पर बिखेर दिये। धरती में से अंकुर फूटे। देखते–देखते अंकुर पौधे बन गये। उनमें लक्ष्मी के कहें अनुसार बालें आई किन्तु उनका रंग लक्ष्मी के शरीर जैसा नहीं था, उनमें गंध नहीं थी उसने सोचा अभी बालें कच्ची हैं। थोड दिन पश्चात् उनकी गंध चारों और फैलने लगी, ग्वालें ने समझा बालियां अब पक गई, चलकर देखना चाहिए। उसने देखा बालियां पककर सुनहरी रंग की हो गई थी। उनकी मीठी गंध हवा में मिलकर वातावरण को सुगन्धित बना रही थी। बालों की खूशबू पा रंग देखकर ग्रामवासी उस ओर आकर्षित होने लगे। थोड़े दिन पश्चात् वह फसल काटकर घर आया।

राजा को भी इस बात की सूचना दी गई। वे भी गाड़ी पर सोना लाद कर खरीदने आये। एक और सोना रखा गया और एक ओर धान, सोना चढ़ता जाये, धान खत्म होने को ही न आये। यह देख राजा आश्चर्य करने लगा। मन में भाव जागा और सुन्दर राजकुमारी का विवाह ग्वाले के साथ कर दिया। ग्वाले और राजकुमारी दोनों ने मिलकर लक्ष्मी का हृदय से पूजन किया। लक्ष्मी के स्थान के सिंहासन पर धान के दाने रखे गये, पूरी तरह श्रृंगार किया गया। पूजा की सारी सामग्री, आम के पत्ते, नारियल, पानी का कलश रखा गया। धूप, दीप नैवेद्य के साथ भोग लगाया गया।

प्रसाद बांटा गया। सबसे पहले कृषक खेत के रखवालों को प्रसाद दिया गया। बैलों को खिलाया गया। पास–पडौस के निवासियों के भी प्रसाद बांटा गया। यहाँ तक कि भोगी–चमार, कुत्ते, बिल्ली तक को आदरपूर्वक प्रसाद दिया गया।

इस विधि से लक्ष्मी बहुत प्रसन्न हुई ग्वाले कको वरदान दिया, जब तक धान की पूजा होगी, खेतों की अच्छी तरह देखभाल होगी, प्रतिष्ठा होगी, देश धन–धान्य से परिपूर्ण होगा तथा देशवासी सुखी–समृद्ध होंगे। प्रत्येक घर में वास करते हुए स्थिर रहूंगी। किसी को काई कष्ट नहीं होगा और न किसी वस्तु का अभाव रहेगा। इतना कहने के साथ ही ल्क्ष्मी विलुप्त हो गई।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

शेष पेज 5 से आगे.....

दृष्टि से कोई अभाव नहीं रहता।दक्षिणावर्त शंख का प्रयोग दीपावली पर होता है। साधक को चाहिए कि इससे पहले ही वह दक्षिणावर्त शंख प्राप्त कर लें। साधुओं एवं योगियों के पास से इस प्रकार के शंख प्राप्त हो सकते है।दीपावली की रात्रि को साधक को चाहिए कि वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पश्चिम की तरफ मुंह कर आसन पर बैठ जाए ओर सामने चांदी या कांसी की थाली में कुंकुम से अष्ट दल बनाकर उस पर दक्षिणावर्त शंख रख दें। इस शंख का मुंह साधक की तरफ होना चाहिए।

इसके बाद उसे जल से स्नान करावे, फिर पंचामृत से स्नान करावे और उसके बाद पुनः जल से स्नान करा कर सफेद बस्त्र से पौंछ लें। यदि संभव हो तो इस प्रकार के शंख को सोने में मंढा लेना चाहिए।फिर इसके बाद इस शंख की अक्षत पुष्प आदि से पूजा करे और सामने अगरबत्ती व दीपक रखें। फिर शंख पर गुलाल एंव इत्र लगावे और उसके सामने नैवेद्य आदि रखें। यह नैवेद्य रखते समय निम्न मंत्र का बराबर–बराबर उच्चारण करता रहे–

मंत्र-ऊँ ह्रीं क्लीं श्रीधरकरस्थाय पयोनिधिजाताय श्रीदक्षिणावर्त शंखाय ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीकराय पूज्याय नमः।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र से शंख का ध्यान करे।

इस प्रकार ध्यान करने के बाद साधक को चाहिए को वह निम्नलिखित मूल मंत्र की 11 मालाएं फेंरे पर रात्रि को आसन बदले नहीं और न बीच में से उठे।

मूल मंत्र-ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं दक्षिणामुखाय शंखनिधये समुद्रप्रभवाय शंखाय नमः।

प्रातः काल उठकर इस शंख को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें या किसी सुरक्षित स्थान में रख दें।

वस्तुत जो भाग्यशाली होते हैं, जिनके जीवन में भाग्योदय होता है, उन्हीं के घर में दक्षिणावर्त शंख पाया जाता है।

प्रभाव–

1. शंख में जल भर कर मस्तक पर रोज छिड़कने से पाप नाश होता है।

2. शंख में जल भर कर पूजन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

3. पूजन के बाद शंख में दूध भरकर यदि बांझ स्त्री पिये तो उसके निश्चय ही संतान होती है।

4. यदि इस प्रकार का शंख घर में होता है तो किसी प्रकार का रोग या संकट घर में नहीं व्याप्त होता है।

5. यदि इस शंख के सामने नित्य अगरबत्ती लगाई जाय तो उस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है, राज्य में सम्मान होता है तथा व्यापार में वृद्धि होती हैं।

6. जिसके घर में शख होता है, उसके घर में अक्षय भंडार बना रहता है।

7. यदि इस शंख में पानी भरकर "अमुंक वशमानाय स्वाहा" मंत्र का 21 बार उच्चारण कर वह जल उस पर डाल दें तो वह निश्चय ही वश में होता हे, इस मंत्र में अमुक के स्थान पर उसका नाम उच्चारण करना चाहिए जिसको अपने वश में करना है।

वस्तुतः ये कल्प अत्यन्त ही गोपनीय एवं महत्वपूर्ण रहे हैं। कुछ सौभाग्यशाली ही ऐसे होते हैं जिनके घर में इस प्रकार के पांचों कल्प सिद्ध किये हुए पाये जाते हैं। प्रत्येक भारतीय के घर में ऐसे कल्प होने से अनुकूलता रहती ही है। यदि साधक इस प्रकार के कल्प सिद्ध न कर सके तो किसी योग्य पंडित या विद्वान से सिद्ध करवा सकता है।

3. पारदेश्वरी महालक्ष्मी पूजन– पारदेश्वरी स्थापना क्रिया हेतु आप किसी भी बुधवार के दिन या किसी भी सोमवार के दिन अपने घर के पूजा स्थान में पारदेश्वरी लक्ष्मी को स्थापित कर दें।शास्त्रों में वर्णित है, जो व्यक्ति पारदेश्वरी लक्ष्मी स्थापना करता है, वअ चाहे कितना ही निर्धन अशक्त और असहाय व्यक्ति हो पारदेश्वरी लक्ष्मी की साधना के माध्यम से लक्ष्मीवान बनता ही है ऐश्वर्यवान बनता ही है, सौभाग्यशाली बनता ही है, उसके घर में लक्ष्मी सहस्त्र रुपों में रहती ही है।

स्थापना विधि–पूर्ण शास्त्रोक्त विधि–विधान से प्राण–प्रतिष्ठित पारदेश्वरी लक्ष्मी का विग्रह प्राप्त कर लें।

किसी भी कृष्ण की त्रयोदशी (वैसे धनतेरस कुबेर दिवस श्रेष्ठ है) को प्रातः काल पूजा स्थान को स्वच्छ कर लें तथा स्वयं भी स्नान कर सर्वथा नये वस्त्र जो गुलाबी या पीले रंग के हो, धारण कर लें।

अपने सामने किसी बाजोट पर गुलाबी रंग का वस्त्र विछाकर उस पर हल्दी से रंगे चावलों के द्वारा स्वास्तिक अंकित करें तथा उस स्वास्तिक पर एक ताम्र या रजत प्लेट रखकर "श्री" मंत्र का उच्चारण करते हुए पुष्प रखें उन पुष्पों पर पारदेश्वरी लक्ष्मी को स्थापित करें।

स्थापन के पश्चात् पंचोपचार पूजन संपन्न करे।

(स्नान चंदन, कुंकुम, पुष्प, नैवेद्य, धूप, दीप, आरती)

पूजन की समाप्ति पर निम्न मंत्र का तीस मिनट तक बिना माला के जप करें और मंत्र जप करते समय अक्षत तथा पुष्प थोड़ा–थोड़ा समर्पित करते रहें।

ऊँ ऊँ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रम्ह पारदेश्वरी सिद्धि ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं ऐं ऐं ऊँ

मंत्र जप पूर्ण होने के पश्चात् गुलाब पुष्पों की माला विग्रह पर समर्पित करें और श्रद्धायुक्त नमन् करते हुए भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना करें कि वे स्थायी रुप से हमारे घर में निवास करे तथा प्रत्येक दृष्टियों से सम्पन्नता प्रदान करें।

दीपावली पर ऋण मुक्ति उपाय– दीपावली महानिशकाल ऋण मुक्ति हेतु विभिन्न उपाय करने के लिए श्रेष्ठ है।

1. व्यक्ति ऋण से ग्रस्त है तो इस मंत्र का जाप करें और मां लक्ष्मी से ऋणमुक्ति की प्रार्थना करें। **।। ऊँ श्रीं ऊँ ।।**

2. अगर निरंतर कर्ज में फंसते जा रहे है तो दीपावली के दिन श्मशान के कुएं का जल लाकर किसी पीपल के वृक्ष पर चढ़ाए। इसके बाद यह क्रिया छह शनिवार करें। ऐसा करने पर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त होते है।

3. ऋणमुक्ता गणपति स्तोत्रःगणेश जी को विघ्नहर्ता भी कहा गया है। वे ऋण रुपी विघ्न को भी हरने वाले हैं। दीपावली की रात्रि में इस स्तोत्र का पाठ करने से गणपति की कृपा प्राप्त होती है।

4. ऋण से छुटकारा पाने के लिए महानिश काल में निम्न प्रयोग करें। सर्वप्रथम पांच लाल गुलाब के पूर्ण खिले फूल ले लें। इसके बाद ड़ेढ़ मीटर सफेद कपड़ा लेकर अपने सामने विछा दें। इन पांचों गुलाब के फूलों को उसमें गायत्री मंत्र पढ़ते हुए बांध दें। अब आप स्वयं जाकर इन्हें गंगा, यमुना या किसी अन्य नदी में प्रवाहित कर दें। गायत्री मंत्र इस प्रकार है।

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।। ❋❋❋

शेष पेज 8 से आगे.....

थी वह भी सुनायी।

कथा: इन्द्रप्रस्थ नगरी में वेदशर्मा नामक एक विद्वान ब्राह्मण के सात पुत्र तथा एक पुत्री थी जिसका नाम वीरावती था उसका विवाह सुदर्शन नामक एक ब्राह्मण के साथ हुआ। ब्राह्मण के सभी पुत्र विवाहित थे। एक बार करवा–चौथ के व्रत के समय वीरावती की भाभियों ने तो पूर्ण विधि से व्रत किया, किंतु वीरावती सारा दिन निर्जल रहकर भूख न सह सकी तथा निढ़ाल होकर बैठ गयी।

भाइयों की चिन्ता पर भाभियों ने बताया कि वीरावती भूख से पीड़ित हैं करवाचौथ का व्रत चन्द्रमा देखकर ही खोलेगी। यह सुनकर भाईयों ने बारह खेतों में जाकर आग जलायी तथा ऊपर कपड़ा तानकर चन्द्रमा–जैसा दृश्य बना दिया, फिर जाकर बहन से कहा कि चाँ निकल आया है, अर्घ्य दे दो। यह सुनकर वीरावती ने अर्घ्य देकर खाना खा लिया। नकली चन्द्रमा को अर्घ्य देने से उसका व्रत खण्डित हो गया तथा उसका पति अचानक बीमार पड़ गया। वह ठीक न हो सका । एक बार इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी करवाचौथ का व्रत करने पृथ्वी पर आयीं। इसका पता लगने पर वीरावती ने जाकर इन्द्राणी से प्रार्थना की कि उसके पति के ठीक होने का उपाय बतायें। इन्द्राणी ने कहा कि तेरे पति की यह दशा तेरी ओर से रखे गये करवाचौथ व्रत के खण्डित हो जाने के कारण हुई है। यदि तू करवाचौथ का व्रत पूर्ण विधि–विधान से बिना खण्डित किये करेगी तो तेरा पति ठीक हो जायगा। वीरावती ने करवाचौथ का व्रत पूर्ण विधि से सम्पन्न किया, फलस्वरुप उसका पति बिलकुल ठीक हो गया। करवाचौथ का व्रत उसी समय से प्रचलित है।अतः सौभाग्य, पुत्र पौत्रादि और धन–धान्य के इच्छुकों को यह व्रत विधि पूर्वक करना चाहिए और इस दिन विभिन्न प्रकार के बधाये या ग्राम्य क्षेत्र में प्रचलित वधावें भी गावें।

❋❋❋

शेष पेज 6 से आगे.....

है। धनागमन के रास्ते सुगम हो जाते हैं।

6. दीपावली के दिन रात्रि में कच्चा सूत ले उसे शुद्ध केसर से रंग कर कार्यस्थल पर रखने से व्यवसाय में निरन्तर उन्नति होती रहती है। भगवान् गणेशजी की कृपा सदा बनी रहती है। व्यक्ति का वुद्धि विवेक जाग्रत रहता है। तथा वह धन कमाने के सही रास्ते पर चलता है।

7. घर या व्यवसाय स्थल पर दीपावली पर लक्ष्मी पादुकाओं की स्थापना अवश्य करें तथा माँ लक्ष्मी से स्थिर रुप से घर में पधारने की प्रार्थना करे।

इनकी पूजा से आर्थिक असुरक्षा का भय दूर होता है व जीवन में आर्थिक सुरक्षा बनी रहती है। इन पादुकाओं में अंकित समस्त चिंह जैसे कमल, कलश, चक्र, मत्सय, त्रिकोण, त्रिशूल, शंख, सूर्य, ध्वजा आदि शुभ लाभ के प्रतीक है।

8. दीपावली की रात्रि श्रीयंत्र की स्थापना अपने घर एवं प्रतिष्ठानों में कर लाभ अवश्य कमायें। यंत्र राज श्रीयंत्र की जितनी प्रंशसा की जाय उतनी ही कम है और यदि यह स्फीटिक पर वना हो तो इसकी महिमा में ओर वृद्धि हो जाती है। श्री यंत्र के दर्शन मात्र से ही मनुष्य धन्य हो जाता है। इस यन्त्र की पूजा साधना करने से साधक की सभी मनोकामनाएं इसी जन्म में पूर्ण हो जाती है। धन के साथ यश कीर्ति भी बढ़ती हैं

9. गणेश यंत्र की स्थापना दीपावली के मुहूर्त पर करें। पीले वस्त्र पर हल्दी के मिले चावल से स्वास्तिक बनाकर गणेश यंत्र की स्थापना विधिवत ढंग से करें।

ऊँ बक्रतुण्डाय ऊँ मंत्र का जाप करें। इससे भगवान् गणेशजी की कृपा सदैव आपके ऊपर व आपके परिवार पर बनी रहेगी। पढ़ने वाले बच्चों की बुद्धि ठीक ढंग से चलेगी तथा व्यक्ति का मन अपने व्यवसाय में लगेगा सदैव उन्नति होती रहेगी।

10. दीपावली के शुभमुहूर्त में माँ लक्ष्मी का लॉकेट विधिवत ढंग से पूजा करके धारण करें। इससे नौकरी व व्यवसाय में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

❋❋❋

शेष पेज 12 से आगे.....

पुष्पमाल्याम् समर्पयामि ''मीठा, खी, बतासे, खाड़ के खिलौने, पॉचों मेवा, आदि थाली में रखकर कहें'' भोजनम् समर्पयामि ''जल चढ़ावें'' आचमनीयम समर्पयामि ''फल चढ़ावें'' फल समर्पयामि ''गोला या नारियल चढ़ावें'' अखंड ऋतुफलम् समर्पयामि ''पान, सुपारी, लौंग, इलायची, कपूर'' ताम्बूल पुंगीफल आदि समर्पयामि ''दक्षिणा चढ़ावें'' शुभ दक्षिणाम् समर्पयामि ''प्रणाम करके मन से परिक्रमा करें। पुष्प हाथ में लेकर प्रार्थना करें।

श्री गणेशाम्बिका प्रसन्न होकर मेरी तथा मेरे परिवार, इष्ट मित्र एवं सम्पूर्ण भारत राष्ट्र की रक्षा करें तथा भगवती लक्ष्मी माँ स्थिर रूपेण इस भवन में एवं व्यापारादि के स्थान में निवास कर सर्वत्र हर्ष विजय प्रदान करें।

कुछ व्यक्तियों के यहाँ हठरी का पूजन होता है ''हठरी पर दीपक जलावें चावल हाथ में ले लें और कहें '' हठरी दैव्यै आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि ''चावल, जल, रोली चढ़ाकर फूल माला पहना दें। रूपया, लड्डू, मिठाई, खील–बतासे, हठरी में रख दें। दुकान, कारखाना, मिल, दफतर गद्दी आदि स्थानों पर बही खाता, कलम, दवात, तिजोरी (कैश बाक्स, गल्ला), मशीन, तराजू, बॉट आदि का पूजन होता है उसे ऊपर लिखे क्रमानुसार अथवा केवल चावल या खील चढ़ाकर सम्पन्न करें। इसके बाद कमल गट्टे की माला से कुवेर मंत्र का 108 बार जाप करें।

यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि पतये धनधान्य समृद्धि मे देहदापय स्वाहा

तिजोरी, कैश बॉक्स या गल्ले में बसने की पुड़िया (पंसारी के यहॉ मिलेगी) लाल कपड़े में बाँध कर रख दें। अब एक थाली में ग्यारह दीपक तेल के जलावें और खीलें हाथ में लेकर कहें'' ॐ दीपेभ्यो नमः ''खीलें दीपकों पर चढ़ा दें। घर में, भगवान के मन्दिर में , रसोई में, सब कमरों में, आँगन, छत, द्वार, नाली के पास, चौराहा, कुँआ, हैण्डपम्प, मन्दिर, पीपल के पेड़ के नीचे आदि स्थानों पर रखें। थाली में सतिया लगाकर तथा फूल डालकर आरती करें।

❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

निकली। इस प्रकार अलक्ष्मी ज्येष्ठा हुई। उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान् लक्ष्मी के साथ प्रकट होकर वर देते हैं कि जहाँ उनकी पूजा नहीं होगी, वहीं उनका वास होगा। इस पुराण में कहीं भी लक्ष्मी नाम का उल्लेख नहीं मिलता है। हाँ, नारायणी अवश्य मिलता है। लक्ष्मी की मूर्ति बनाकर दान करने का प्रसंग मिलता है, परन्तु मूर्ति के स्वरुप का वर्णन नहीं।

नारद पुराण में विष्णु की माया, जिसके भद्रकाली, दुर्गा, लक्ष्मी, बाराही, चण्डी, ऐन्द्री, माहेश्वरी, वैष्णवी आदि अनेक रुप है, को ही जगत् की जन्मदात्री शक्ति कहा है इसमें भी विष्णु के वक्षःस्थल पर श्रीवत्स के चिंह का उल्लेख मिलता है। उन्हें 'कमलापति' और 'कमलाकान्त' कहा है। इसमें कहा है कि जहाँ शिव और विष्णु की पूजा होती है, वहीं लक्ष्मी वास होता है। इसमें मंत्रसिद्धि, श्रीयंत्र एवं श्रीकवच का उल्लेख मिलता है।

गुरुड पुराण में विष्णु को श्रीपति कहा है। लक्ष्मी–नारायण की मूर्ति बनाकर कुंकुम और पुष्पमाला से पूजन करने का निर्देश प्राप्त होता है। पितामही जीवित हो और माता की मृत्यु हो जाए, तक एक पिण्ड महालक्ष्मी को देने का आदेश इसमें मिलता है।

पुराणों में लक्ष्मी और श्री में अन्तर नहीं बताया गया है। इनके कई रुप मिलते हैं। विष्णु पत्नी के रुप में विभिन्न नामों से गजलक्ष्मी, पद्हस्ता आदि। शंख, पद्म, जल, बिल्वपत्र, धन, अमृतघट, कुंजारों से इनका संबंध मिलता है।

इनका वाहन उल्लू और गरुड कहा जाता है।

स्वभाव से परम चंचला, सुख ऐश्वर्य दातालक्ष्मी स्वर्ण की भाँति कांतिमयी, गौरवर्णी, चतुर्भुजी, दो भुजाओं में कमल, दो भुजाएँ वर एवं अभय मुद्रा धारण किए। मस्तक पर मुकुट, दिव्य वस्त्र–आभूषणों से सुसज्जित है। इनका आसन कमल है। उनके दोनों ओर स्वर्ण कलश लिए हाथी खड़े है। अपना निरादर, अपमान करने वाले को दुःख दरिद्रता और अपने भक्तों को सुख–वैभव प्रदान करती है।

लक्ष्मी की स्तुति में स्वयं इन्द्र ने कहा है:

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भुक्ति मुक्तिप्रदायिनी।
मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरी।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते।।

अर्थात् सिद्धि–बुद्धि प्रदायी, भोग और मुक्ति दोनों को प्रदान करने वाली, मंत्र पूजा आद्या शक्ति, सर्वशक्तियुक्ता, योग का आधार लक्ष्मी ही है, जिसके बिना कुछ भी नहीं चल सकता। ❋❋❋

शेष पेज 11 से आगे.....

करने के लिए इन्द्र के स्थान पर गोवर्धन पर्वत की पूजा अपने रुप में करवायी तथा वृजवासियों को इसका महत्व समझाया तथा इन्द्र के प्रकोप से सभी को बचा कर इन्द्र का घमण्ड दूर किया व तभी से गोवर्धन पूजा इन्हे के स्थान पर होने लगी। इस दिन शुभ स्थानों पर गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत का स्वरुप बनाकर छप्पन प्रकार के भोग लगायें जात हैं व जयकारें लगाते हुए परिक्रमा की जाती है तथा कई प्रकार के अन्नों को मिलाकर अन्नकूट बनाया जाता है व भोग लगाकर प्रसाद रुप में बाँटा जाता है।

5. **भाई–दौज–**(यमाद्वितीया) यह त्यौहार कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। इस पर्व का मुख्य लक्ष्य भाई–बहिन के पवित्र रिश्ते को मजबूत करना है।

पुरातन कथानुसार इसदिन सूर्यपुत्री यमुना ने अपने भाई यमराज को बड़े आदर सत्कार से भोजन कराया था जिससे प्रसन्न होकर यमराज ने यमुना बहिन को बहुमूल्य वस्त्राभूषण दिये और वरदान मांगने को कहा तब यमुना जी ने यमराज जी से वचन लिया जो भी बहिन इस दिन अपने भाई का आदर सत्कार करेगी तथा यमुना जल से स्नान करेगी, टीका लगाकर भोजन आदि करायेगी तो उसे यम का भय नहीं सतायेगा।

इसलिए इस दिन भाई–बहिन यमुना जल में स्नान करके टीका लगाकर भोजनादि कराकर भाई की लम्बी आयु की कामना करती है। तथा भाई बहिन को उपहारदि भेंट करते है।

जिनकी सगी बहिन न हो वो चचेरी/ममेरी या धर्म की बहिन के साथ यह कार्य कर सकते है। ❋❋❋

यंत्रों को पुनः सिद्ध कराने हेतु

भविष्य निर्णय पाठकों के लिये एक सुनहरा अवसर। दीपावली पर गुरु जी (डा. महेश पारासर) द्वारा प्रत्येक वर्ष विशाल हवन किया जाता है जिसमें पुराने यंत्रों को विधिवत रुप से सिद्ध किया जाता हैं। अगर आप भी अपनें यंत्रों को पुनः सिद्ध कराना चाहते है तो भविष्य दर्शन कार्यालय पर सम्पर्क करें। मों. 9719666777, 9557775262

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262